PANCHDOOT
The Voice of Youth
मार्च-अप्रैल, 2019 मूल्य 30/- रूपए

पञ्चदूत

आतंकवाद और स्ट्राइक्स

www.panchdoot.com

संस्थापक	स्व. नरेन्द्र मुकुल
व्यवस्थापक	त्रिभुवन नारायण सिंह
प्रधान कार्य. अधिकारी	विक्रम सोलंकी
प्रधान संपादक	व्याघ्रराज
वरिष्ठ संपादक	निधि शर्मा
सह- संपादक	संजय सोलंकी
विधि सलाहकार	राजेन्द्र प्रसाद जैन पराग जैन रामकुमार खटोड़
क्रिएटिव हैड	प्रदीप पाण्डेय
डिजाइनिंग	सागर कम्प्यूटर्स
कार्यालय संवाददाता	खुशहाल शर्मा
मार्केटिंग	मुकुल्स पब्लिकेशन
मार्केटिंग हैड	गौरव शर्मा

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक व्याघ्रराज के द्वारा पञ्चदूत मासिक पत्रिका, आजाद प्रिंटर्स, चन्द्रशेखर आजाद मार्केट, हनुमानगढ़ टाउन (राज.) 335513 से मुद्रित एवं प्रकाशित। **सम्पादक** : व्याघ्रराज

आरएनआई नं- 39685/83

पंजीकृत कार्यालय

पञ्चदूत 'मासिक', आजाद प्रिंटर्स, चन्द्रशेखर आजाद मार्केट, हनुमानगढ़ टाउन

वेब कार्यालय

माणिक्य नगर, नजदीक पुलिस थाना, माण्डलगढ़, जिला भीलवाड़ा

फोन- 01489-230125 **मो.-** 7976407302

संपादकीय कार्यालय

जीवन भवन 65-के ब्लॉक, श्रीगंगानगर (राज.) 335001

क्षेत्रीय कार्यालय

- 74, दूसरी मंजिल, लाजपत नगर, जगतपुरा, जयपुर
- न्यू हाउसिंग बोर्ड, पाली
- किला रोड पावटा, जोधपुर
- गुमानपुरा, कोटा
- हिरणमगरी, उदयपुर
- बजरंग फिलिंग स्टेशन, नागौर

प्रादेशिक कार्यालय

- पूजावाला मोहल्ला, बठिण्डा
- खण्डवाड़ी, तहसील पालमपुर, जिला-कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश
- मौहल्ला बेरीवाला बुगरासी, बुलंदशहर, यू.पी.
- एचएन-14, वार्ड न.-2 मगरिया, उचेड शाजापुर, मध्यप्रदेश

सदस्यता शुल्क

मासिक : 30/- **वार्षिक** : 300/-

सभी जिलों में जिला स्तरीय पञ्चदूत के शाखा कार्यालय को व्यवस्थित संचालन तथा क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व के लिए संपर्क करें।

फोन- 01489-230125 **मो.-** 7976407302

E-mail: magazine@panchdoot.com

सर्वर प्रबंधक

Querynext Technology

पत्रिका में प्रकाशित चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।

सम्पादकीय

इतना ज़हर मत उगलना की नजरें चुराने की नौबत आ जाएं

चुनाव का शंखनाद हो चुका है और वह भी ऐसे माहौल में जब देश ने आतंकवाद का एक बड़ा दंश सहन किया और हमारी सेना ने दुश्मन की धरती में घुस कर उस का करारा जवाब दिया। अब आप समझ सकते है कि हमारे राजनेताओं के भाषणों को और उनकी बेचैनी को! वास्तव में मेरा यहां पर इस उलझे हुए विचार को तोड़ने-मरोड़ने का कोई इरादा नहीं है, परन्तु इतना अवश्य कहना चाहूंगा कि इस बेचैनी में अपनी जुबां से इतना जहर मत उगल देना कि कोई बाहरी दुश्मन इसका फायदा उठा सके और आप भी जब कभी आपस में मिलों तब नजरें चुराने की नौबत ना आ जाएं।

राजनेताओं को छोड़ो जनाब, यहां तो आलम यह है कि अपनी पसंद के नेता और उसके शब्दों के पीछे आम जनता आपस में उलझ कर अपने रिश्ते खराब कर रही है, यह जानते हुए भी वो तो एक दूसरे को मंच पर से गलियां देकर शाम को वापस साथ में पार्टी मना लेंगे। वास्तव में आम जनता अपनी पसंद की पार्टी और नेताओं के लिए आपस में रिश्ते इतने खराब कर लेती है कि चुनाव के बाद नजरें मिलाने से भी कतराते हैं। ऐसे आलम को देख कर कोई भी बुद्धिजीवी यह सोचने पर विवश हो जाता है कि ऐसा क्या है इस चुनावी दंगल में जो आम आदमी की संवेदनाओं को शून्य कर देता है और वह देश एवं स्वयं से पहले अपने राजनेताओं को प्राथमिकता देने लग जाता है? यही सवाल जब मैंने एक विद्वान से पूछा तो जवाब मिला कि हमको आजादी और अधिकार मिले तो बरसों हो गए है परन्तु गुलामी का जो जीवन हमारे पूर्वजों ने झेला है, वह जेनेटिक रूप से अभी भी हमारी रगों में कायम है एवं आगे से आगे हमारी पीढ़ियों में हस्तांतरित होता जा रहा है। इस हस्तांतरण में सोशल मीडिया का बहुत बड़ा हाथ है क्योंकि वह व्यक्ति की सोच को समझ कर उसके जैसे ही वीडियो और पोस्ट को उसके सामने रखता है जिन से उसने शुरुआत की थी और इस तरह से वह व्यक्ति अपनी मानसिकता की आंख पर ऐसी पट्टी चढ़ा देता है जो कुछ भी होने पर भी उतरने वाली नहीं है।

सोशल मीडिया को उन लोगों या संस्थाओं में शामिल करना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी जिन लोगों या संस्थाओं ने हमारे देश को अपने फायदे के लिए बरसों तक गुलाम बनाये रखा था, बस इसके और उनके गुलामी करवाने के तरीकों में बहुत फर्क है जो समय के साथ होना लाजमी है। इस सोशल मीडिया के साथ-साथ विज्ञापनों और बिकाऊ खबरों को भी इस मानसिकता के निर्माण के लिए जिम्मेदार ठहराना आवश्यक है। वास्तव में इन सब ने अपने आर्थिक फायदे के लिए समय-समय पर आम आदमी की मानसिकता को अपने हिसाब से आसानी से ढाल लिया और वह सब खुशी-खुशी करवा लिया जो वो सब करवाना चाहते थे।

अभी समय यह है कि अधिकतर व्यक्ति अपनी वास्तविक सोच का उपयोग नहीं करते और वे वैसा ही सोचते हैं जो उनको सोचने के लिए परोसा गया है। यहां तक कि वह यह भी नहीं सोचता कि जो उसको परोसा गया है वह सत्यता की कसौटी पर खरा उतरता है या नहीं? कुछ लोग इसको परखने की कोशिश करते भी है तो उनके तथाकथित आका फिर से उनको ऐसा चश्मा पहना देते है जिससे सत्यता की झोपड़ी की जगह झूठ का शानदार महल दिखाई देता हैं जो उसकी मृगतृष्णा को जगा कर भटकने को मजबूर करते हुए फिर से अपनी चरण में आने पर मजबूर कर देते हैं।

वो कहते हैं ना कि उम्मीद पर दुनिया कायम है तो सच में यह उम्मीद हमेशा रहेगी कि हमारी जनता की देशभक्ति जो आतंकी घटना या खेल के दौरान समय-समय पर जाग कर, सोशल मीडिया पर ज्वार की तरह आकर भाटें की तरह शांत हो जाती है वो एक दिन हमेशा के लिए कायम होगी और हर भारतीय उसके आकाओं की तरफ से पहनाया हुआ चश्मा तोड़कर सबसे पहले भारत की कामना के साथ खड़ा होगा। जिस दिन ऐसा होगा उस दिन हमारे चेहरों से गुलामी की धूल साफ हो जायेगी और भारत वास्तविक विश्वगुरु के रूप में अपने आप को सार्थक रूप से साबित कर देगा। भारत की आधी आबादी भी इंडिया फर्स्ट (सबसे पहले भारत) की विचारधारा को व्यवहार में लाने लग जाये तो वह दिन दूर नहीं होगा जब इन तथाकथित आकाओं की दुकानों पर तालें लगने शुरू हो जायेंगे और सुधरने या हमारा देश छोड़ने को मजबूर हो जायेंगे।

उम्मीद यह है कि आने वालें लोकतंत्र के महापर्व में हम में से बहुत से भारतीय अपनी मानसिकता का सदुपयोग कर के मताधिकार का उपयोग करेंगे और अपने आसपास के लोगों को भी एक स्वतंत्र मानसिकता का परिचय देते हुए, तथ्यों को सत्यता पर परखते हुए इंडिया फर्स्ट (सबसे पहले भारत) की सोच के साथ मतदान के लिए प्रोत्साहित करेंगे, परन्तु यह मत भूलना कि इस प्रयास में आप भी कुछ ऐसा ना कर जाओ कि चुनाव के बाद नजरें चुराने की नोबत आ जाएं।

आतंक की जड़ : मानव मन या हालात

पायल सांवरिया 'शानी'

आतंक क्या है? ऐसे हालात जिसकी वजह से आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक और विचारात्मक लक्ष्यों की पूर्ति हेतु आम जनता को खामियाजा भुगतना होता है। आतंक की जमी को अगर खोदकर भीतर तक देखें तो पता चलता है कि मानव मन ही तो है इसका मूल कारण है। मानव मन एक कोरा कागज है जिस पर जो चाहे वो लिख दो। जैसे विचार मन में उत्पन्न होते हैं मनुष्य उसी तरह की गतिविधि में शामिल होता है। मन में यदि विष भरा होगा तो विचार भी जहर की भांति ही होगें। मन में यदि मधु भरा होगा तो विचार भी मधुरता लिए ही होगें। जैसी जमीन वैसी फसल। आतंकवाद यूं ही नहीं पनप गया। राजनीतिक, धार्मिक ठेकेदार अपने निज हितों के वास्ते मासूमों को शिकार बनाते हैं। मुख्य रूप से ऐसे युवा ही शिकार बनते हैं जिनको पारिवारिक अलगाव, अशिक्षा का वातावरण मिलता है उनमें आरंभ से ही हिंसक विचारों को बोया जाता है और धर्म के नाम पर उनको ओर ज्यादा उग्र बनाया जाता है। (आतंकवाद) समग्र रूप में अगर कहे तो उस माहौल को आतंकवाद कहा जाता है जहां हिंसात्मक वातावरण अपनी चरम सीमा पर होता है। कुछ संगठन या देश या लोग अपने आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक हितों की प्रतिपूर्ति के लिए नागरिकों की सुरक्षा को ही निशाना बनाते हैं। कई दफा गैर-राज्य असामाजिक तत्वों द्वारा भी राजनीतिक, वैचारिक या धार्मिक हिंसा कर आतंकवाद की आग को फैलाया जाता है। गैर-कानूनन हिंसा और युद्ध भी आतंकवाद का ही रूप है। अधिकतर आपराधिक संगठन इस तरह के काम को बढ़ावा देते हैं हालांकि ये आतंकवाद नहीं होता है, फिर भी इन सभी कार्यों को आतंकवाद कह सकते है। आतंकवाद किसी व्यक्ति, समाज या देश विशेष के लिए ही नहीं बल्कि पूरी मानव जाति के लिए कलंक है। हमारे देश में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व मे आतंक की ज्वाला इतनी तीव्रता से फैल

देश में आतंकवाद के चलते 20 वर्षों में 50,000 से भी अधिक परिवार प्रभावित हो चुके हैं। कितनी ही महिलाओं का सुहाग उजड़ गए।

रही है कि अगर इसको समय रहते नहीं रोका गया तो यह पूरी मानव जाति के लिए खतरा बन सकता है। शाब्दिक अर्थों में आतंकवाद का अर्थ भय अथवा डर के सिद्धान्त को मानने से है। दूसरे शब्दों में, अपने निजी हितों और स्वार्थों की पूर्ति हेतु भययुक्त वातावरण उत्पन्न करने का सिद्धांत आतंकवाद कहलाता है। सकल विश्व के समस्त देश प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इसके दुष्प्रभावों से ग्रसित हैं। आतंकवाद नामक रावण के दस सिर है। रावण के सिर की तरह एक स्थान पर इसे खत्म किया जाता है तो दूसरी ओर एक नए

खून-खराबा, मार-काट, बलात्कार आदि घटनाओं से ग्रस्त यह जम्मू कश्मीर गत 20 वर्षों से पुनः अमन-चैन की उम्मीदें लिए कराह रहा है।

सिर की भांति उभर आता है। अगर हम अपने देश का ही उदाहरण लें तो हम देखते हैं कि एक तरफ अथक प्रयासों के बाद हम पंजाब से आतंकवाद का समाप्त करने में सफल होते हैं तो दूसरी तरफ यह जम्मू-कश्मीर, असम व अन्य उत्तर-पूर्वी राज्यों में प्रारंभ हो जाता है। हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान के द्वारा भारत में आतंकवाद को समर्थन देने की प्रथा तो लगातार पचास वर्षों से चली आ रही है। हमारा भारत देश धर्मनिरपेक्ष देश है। यहां अनेक धर्मों के मानने वाले लोग निवास करते हैं। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, ब्रह्म समाजी, आर्य समाजी, पारसी आदि सभी धर्मों के अनुयाइयों को यहां समान दृष्टि से देखा जाता है तथा सभी को समान अधिकार प्राप्त हैं। वास्तविक रूप में धर्मों का मूल एक है। सभी ईश्वर पर आस्था रखते है तथा मानव कल्याण को प्रधानता देते हैं। सभी धर्म एक-दूसरे को प्रेमभाव व मानवता का संदेश देते हैं परंतु कुछ असामाजिक तत्व अपने निजी हित और स्वार्थों की पूर्ति के लिए धर्म का गलत प्रयोग करते है। धर्म की आड़ में वे समाज को इस हद तक भ्रमित कर देते है कि उनमें किसी एक धर्म के प्रति घृणा का भाव समावेशित हो जाता है। उनमें ईर्ष्या, द्वेष व परस्पर अलगाव इस सीमा तक फैल जाता है कि वे एक दूसरे का खून बहाने से भी नहीं चूकते हैं। देश में आतंकवाद के चलते 20 वर्षों में 50,000 से भी अधिक परिवार प्रभावित हो चुके हैं। कितनी ही महिलाओं का सुहाग उजड़ गए। कितने ही माता-पिता बेऔलाद हो चुके हैं तथा कितने ही भाइयों से उनकी बहनें व कितनी ही बहनें अपने भाइयों से बिछुड़ चुकी हैं। पिछले दशक के हिंदू-सिख में कितने ही लोग जिंदा जला दिए गए। इसी आतंकवाद ने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या कर दी। इतना ही नही हमारे भूतपूर्व युवा प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी इसी आतंक रूपी दानव की क्रूरता का शिकार बने। वे सभी नेता जिन्होंने अपने निजी हितों के लिए आतंकवाद का समर्थन किया बाद में वे भी इसके दुष्परिणाम से नहीं बच सके। पाकिस्तान के अंदर बढ़ता हुआ आतंकवाद इसका प्रमाण है। वहां के शासनाध्यक्षों पर लगातार आतंकी हमले हो रहे हैं। पूरी दुनिया में छोटी-बड़ी आतंकवादी घटनाओं का एक सिलसिला सा चल पड़ा है। धरती का स्वर्ग कहे जाने वाले कश्मीर में तो खून की नदियां बहना आम बात हो गई है वह तो आतंकवादियों का ठिकाना बन गया है। प्राकृतिक सौंदर्य का यह खजाना आज भय और आतंक का पर्याय बन रहा है। खून-खराबा, मार-काट, बलात्कार आदि घटनाओं से ग्रस्त यह जम्मू कश्मीर गत 20 वर्षों से पुनः अमन-चैन की उम्मीदें लिए कराह रहा है। आतंकवाद के कारण यहां का पर्यटन बुरी तरह प्रभावित हो चुका है। हजारों की संख्या में लोग वहां से पलायन कर चुके हैं। गत वर्षों में इस आतंकवाद ने कितनी जाने ली हैं कितने सैनिक शहीद हुए हैं इसका अनुमान लगाना मुश्किल हो गया है। यह आतंकवाद एक सुनियोजित अभियान के तहत चलाया जा रहा है, इसलिए इसकी समाप्ति उतनी सरल नहीं है। आतंकवाद के चलते खलनायकों को नायक के रूप में देखा जा रहा है। ऐसा नहीं है कि केवल निरीह लोग ही इसकी गिरफ्त में आते हैं। आतंकवाद ने अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश को भी नहीं छोड़ा जिसके फलस्वरूप हजारों लोग मौत के मुंह में समा गए तथा अरबों डॉलर का नुकसान उठाना पड़ा। आतंकवाद मानव सभ्यता के लिए कलंक है। उसे किसी भी रूप में पनपने नहीं देना चाहिए। विश्व के सभी राष्ट्रों को एक होकर इसके समूल विनाश का संकल्प लेना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ी को हम एक सुनहरा भविष्य प्रदान कर सकें। आज के परिप्रेक्ष्य में देखें तो आतंकवाद पूर्ण रूप से इस्लाम से जुड़ा हुआ ही नजर आता है। अनेक उदाहरण इसकी पुष्टि करते हैं जैसे गत 20 वर्षों में विभिन्न देशों भारत, अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, इजराइल, इराक सीरिया सऊदी अरब में जितने भी आतंकी हमले हुए सबका संबंध इस्लामिक मूल विचारधारा से प्रत्यक्ष जुड़ा हुआ है। तालिबान अलकायदा, बोकोहरम आईएसआई, लश्कर ए तैयबा, जैश ए मोहम्मद, इंडियन मुजाहिदीन सिमी नामक आंतकी संगठन का संबंध इस्लाम और कुरान के उन आयतों से सीधा जुड़ा है जिन में जिहाद और गैर-मुस्लिमों के विरुद्ध हिंसा करने का उल्लेख है। उनके मन में धार्मिक हितों की बात कहकर यह आतंकी संगठन गैर-मुस्लिमों के साथ हिंसा करके उन का दमन करना चाहते हैं। आंतकवाद में गैर मुस्लिम लोग नही होते है इसकी भी पुष्टि भी हुई है, 20 वर्षों में दुनियाभर में हुए सभी आतंकी हमलों से पहले या बाद या हमलों के समय आतंकियों ने विशेष इस्लामिक नारे लगाये हैं जब कि इन के अलावा किसी और सामूहिक हिंसा जिस को आतंकवाद का नाम दिया जा सके उन में इस्लामिक नारों का सम्मलित होना सिद्ध करता है कि वर्तमान में हिंसा की यह प्रवृति इस्लाम से माध्यम से ही है। इसको मिटाने के लिये इस्लाम मानने वालों को ही आगे आना होगा। आंतकवादी गतिविधियां गत 20 वर्षों से पूर्व तो कभी नहीं हुई उसके बाद से ही हो रही है इसका क्या कारण है यह तो ज्ञात नहीं परन्तु धर्म से जुड़ने पर इसका स्वरूप घातक हो चुका है। आतंकवाद को जड़ से उखाड़ फेंकना परमावश्यक हो गया है। इस हेतु समाज, राज्य, देश और विश्व स्तर पर सबको कदम बढ़ाने होगें।

आतंकवाद के प्रभार

- कई बेगुनाहों की मौत।
- कभी-कभी आतंकवाद के सामने सरकार भी कमजोर पड़ जाती हैं।
- पेड़-पौधों और जीव-जन्तु की हत्या।
- लोगों का सरकार पर से भरोसा उठ जाना।
- कई बार आतंकवाद का सहारा लेकर सरकार गिराई जाती हैं।

आतंकवादी कई बार राजनैतिक और सामाजिक सिस्टम को नुकसान पहुंचाने के लिए ऐसे कदम उठाते पर उनके इस कदम से पता नहीं कितनी बहनें अपना भाई और कितनी माएं अपना बेटा खो देती हैं। लोगों के अंदर डर भर जाता है जिससें वो घर से बाहर निकलने में भी घबराते हैं।

युद्ध से नहीं मिलकर होगा आतंकवाद का अंत

प्रगति गुप्ता

आतंकवाद का नाम सुनते ही हम थर-थर कांपने लगते हैं। ये शब्द ही ऐसा है जो अपने नाम मात्र से लोगों के अंदर खौफ पैदा करता है और आतंकवादी का नाम घृणा और क्रोध। आतंकवादी का नाम सुनकर हमारे आखों के सामने उन लोगों की तस्वीरें छलकती हैं जो हमारे वीर युद्धाओं को बमों और आर.डी.एक्स जैसे खतरनाक कैमिकल से मारते हैं। पर क्या सच में आतंकवादी सिर्फ इन्हें ही कहा है। नहीं हर वो गैर कानूनी काम जो गलत तरीकों से किया जाता है, उसे आतंकवाद माना जाता है।

आतंकवाद का नाम अब हर एक बच्चा जानता है। आतंकवादियों ने हर देश मे अपना गंदा रूप फैला रखा है। कोई भी देश आतंकवाद को पना नहीं देता और जो देश आतंकवाद को अपनी भुजाओं मे पनपने देता है उस देश को भी आतंकवादी देश का नाम दे दिया जाता । हम हर आतंकवाद की नजर मे उन कट्टर मुस्लिमों को लेते हैं जो अपने गंदे मन्सूबों को अंजाम देने के लिए दरिंदगी और हैवानियत फैलाते हैं। यूं तो बलात्कारी और चोर भी आतंकवादी की श्रेणी में आते हैं क्योंकि ये भी गैर कानूनी काम करते हैं सजा तो इन्हें भी कड़ी से कड़ी मिलनी चाहिए। ऐसा माना जाता है कि आतंकवाद की नींव 1967 मे रखी गई थी जब बंगाल के कुछ लोग अपने हक की लड़ाई के उग्र हो गए थे और हिंसा के मार्ग पर उतर आए थे। जब उन्हें आतंकवादी का नाम दिया गया। पर आज के समय में आतंकवादी का रुप पाकिस्तान ने धारण किया है। कश्मीर को लेकर दोनों देशों में मनमुटाव चलता है। एक सच हम सब जानते हैं कि भारत और पाकिस्तान एक ही धरती मां की संतान हैं जो अंग्रेजों के राज्य में दो अलग हिस्सों में बांट दिए गए थे। जबसे लेकर आज तक हमेशा भारत और पाकिस्तान में जंग छिड़ी हुई है और जंग का कारण हम कश्मीर को मानते हैं। क्या सच मे दोनों देशों के बीच जंग का कारण कश्मीर ही है कश्मीर को जन्नत कहा जाता है और वो स्थान है भी इतना सुंदर और मनमोहन की हर कोई उसके सौंदर्य मे डूब जाता है। ऐसे मे दोनों देश चाहते हैं कि कश्मीर उनके मे हिस्से हो और इसी कश्मीर को लेकर जंग छिड़ी हुई रहती है।

आइए जानते हैं क्या हैं आतंकवाद की मुख्य जड़ें

- जनसंख्या का असीम रुप मे बढ़ना
- शिक्षा का अभाव,
- सामाजिक और राजनैतिक मसलों का अजब रुप मे सामने आना।
- धर्म के नाम पर लोगों के बीच मन -मुटाव पैदा करना

आतंकवाद हमेशा से गलत था और हमेशा गलत ही रहेगा। आतंकवाद एक वो रूप हैं जो दरिंदगी फैलाता है। 18 सितम्बर 2016 मे हुआ उरी हमला तो हम सब तो याद हैं जब हमारे 18 से 25 के बीच सैनिकों को छल से मारा गया था। वो हमला दिल दहलाने वाला था। जिसके बाद हमारी

सरकार ने सर्जिकल स्ट्राइक की और उरी हमले का बदला लिया उसके बाद अभी हाल में ही हुआ पुलवामा अटैक हम सब के अंदर आक्रोश पैदा करती है जिसमें हमारे 44 सैनिक वीर गति को प्राप्त हुए और 26 फरवरी को हमारे सैनिकों ने एयर स्ट्राइक की। 44 के बदले (एक अनुमान के मुताबिक) 200 को मारकर अपना गुस्सा ठंडा किया। जिसके भारत में भी बहुत शांति और धैर्य देखने को मिला। लोग खुश थे कि उन्होंने अपने वीर सैनिकों की मौत का बदला सफलतापूर्वक लिया। पर ऐसे कब तक चलेगा वो हमारे चार मारेंगे और हम उनके चालीस ये तो आतंकवाद खत्म करने का सही तरीका नहीं है न, हमें आतंकवाद को खत्म करना है, आतंकवादियों को नहीं। आतंकवादी भी हमारी तरह इंसान हैं जो सच और इमान का मार्ग छोड़ बुराई और दरिंदगी के मार्ग पर उतर आए हैं। हमें उन्हें सही मार्ग पर लाकर एक अच्छा इंसान बनाना चाहिए न कि उनका सीधा खात्मा करना चाहिए। हम सब जानते हैं कि आतंकवाद एक गलत रास्ता है पर ऐसा क्या हैं कि आतंकवाद दिन पर दिन इतना प्रबल और प्रखण्ड रूप धारण कर रहा है।

आइए जानते हैं आतंकवाद के कुछ मुख्य कारण

- बंदूक, तोपें और मिसाइलों का अधिक रूप में निर्माण होना एंव इस्तेमाल होना।
- शिक्षा का गलत तरीके से इस्तेमाल करना।
- जल्द ही किसी के बहकावे में आना।
- सही और गलत में फर्क न समझ पाना
- देश के प्रति हीनभावना रखना।

आतंकवाद को जड़ से मिटाने के लिए हमें हर युवा पीढ़ी को शिक्षित करना पड़ेगा ताकि वो सही और गलत में फर्क समझ पाए। कई बार वो नहीं देख पाते जो असल में सच होता है। बहुत से लोग अपना पेट पालने के लिए गलत रास्ते पर चल पड़ते हैं और करे भी क्या? रोजगार की कमी इंसान को आधा खोखला कर देती हैं। ऐसे में इंसान को जो समझ आता वो कर बैठता है पर कई बार अपनी बात को मनवाने के लिए भी लोग आतंकवाद के रास्ते पर उतर जाते हैं। इस रास्ते पर इंसानियत, प्रेम, ईमान और मानवता सब बर्बाद हो जाता है। आतंकवादियों के अंदर समाज, राजनीति और देश के प्रति केवल आक्रोश फैलता है।

आतंकवाद को खत्म करने के कुछ उपाय

- जातिवाद को सही से समझना होगा, धर्म से पहले इंसानियत दिखानी होगी।
- शिक्षा का सही रूप से मिलना, शिक्षा वो साधन है जो इंसान को सही गलत में फर्क समझाता है।
- सारे देशों को एकजुट होकर आतंकवाद के खिलाफ लड़ना होगा। एक अकेला देश आतंकवाद को खत्म नहीं कर सकता।

कई बार हमें देखने और सुनने मिलता है कि ये हमले हमारे देश की सरकार खुद करवाती हैं ताकि उनकी सरकार बनें पर हम इस बात को नहीं मानते, न ही मानना चाहते हैं। राजनीति का मुंह भले ही जितना घिनौना हो पर उसके मकसद इस हद तक भी नहीं गिर सकते। किसी देश की सरकार अपने ही सैनिकों पर हमला नहीं करवा सकतीं। आतंकवाद जातिवाद के कारण ज्यादा पनपता है क्योंकि जाति इंसान का अस्तित्व होती हैं और कई बार खुद की जातियों को बलवान साबित करने के लिए लोग आतंकवाद को अपनाते हैं। जिसमें हिन्दू-मुस्लिम की जाति को लेकर ज्यादा दंगे-फसाद होते हैं। और कई बार लोग पैसों की लालच में भी आतंकवाद का रास्ता स्वीकारते हैं। जो कि सच मे बहुत गलत है।

आतंकवाद सिर्फ हमारे देश की समस्या नहीं है। आज आतंकवाद से सारे देश परेशान हैं और इसके खिलाफ लड़ने की हर मुमकिन कोशिश कर रहे हैं। आतंकवाद का कोई धर्म और मजहब नहीं होता है हम ज्यादातर आतंकवाद के लिए पाकिस्तान को जिम्मेदार ठहराते हैं पर क्या हम जानते हैं कि पाकिस्तान मे भी कई बार आतंकी हमले हुए हैं तो क्या वो देश खुद ही अपने देश में हमले करवाता है। हमें आतंकवाद के खिलाफ लड़ना है किसी देश के खिलाफ नहीं। आतंकवादियों को मारने से आतंकवाद खत्म नहीं हो जाएगा। वो हमारे सैनिकों को मारते हैं और फिर हम उनके ऐसे तो आक्रोश और घृणा दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाएगी और आतंकवाद फैलता जाएगा। हमें मात्र कहना होता है पर असल में हम उस दर्द का अंदाजा भी नहीं लगा सकते जो एक जवान बॉर्डर पर खड़ा झेलता है। हमले में मारे हमारे सैनिक जाते हैं। इसलिए सरकार से यही गुजारिश है कि एकजुट होकर आतंकवाद का खातमा करें।

अपनी बेवसाइट और मोबाइल एप बनवाओ
सस्ते में अपने नाम और बिजनेस को चमकाओ
www.querynext.com
Querynext Technology
Contact - Akram Khan
+919967207816
akramkhan0889@gmail.com

दीपा जोशी धवन

आतंकवाद राजनीति अथवा धार्मिक उन्माद से जन्म लेता है या प्रेरित होता है किंतु इसकी आग को हवा देने में जो सबसे आगे रहते हैं उनमें पहला नाम है जंग के हथियारों के व्यापारी। यह सोचने की बात है कि यदि खपत नहीं होगी तो उनका व्यापार कैसे चलेगा।

आतंकवाद एक अमरबेल

आतंकवाद का विकराल सर्प आज सम्पूर्ण विश्व को अपने चंगुल में जकड़कर अपना विषैला फन फैलाये फुफकार रहा है। संसार का शायद ही कोई कोना अब इससे अछूता रह गया है। अमेरिका का 9/11, लंदन मेट्रो रेल बम धमाके, फ्रांस में बस चालक द्वारा कुचली गयी भीड़, थाईलैंड में हुए बम विस्फोट, पाकिस्तान में स्कूल पर हुए हमले में मारे गए मासूम बच्चे, यह सूची अंतहीन है। सीरिया जैसे मुल्कों के बारे में तो क्या ही कहा जाए।

अयं निज: वेति गणना लघुचेतसाम।
उदारचरितानां तू वसुधैव कुटुम्बकम।।

अर्थात् यह मेरा बंधु है और वह नहीं, इस प्रकार की तुलना छोटे चित्त वाले व्यक्ति करते हैं। उदार हृदय व्यक्तियों के लिए सम्पूर्ण धरा ही परिवार है। यह सनातन धर्म का मूल संस्कार एवं विचारधारा है।

राजनीतिक छींटाकशी में विपक्ष आये दिन, भारत के शीर्ष नेतृत्व पर कायर होने, आक्रामक रवैया न रखने जैसे आरोप लगाता रहता है। उपनिषद् में लिखी हुई उपरोक्त पंक्तियों के उद्धरण का अभिप्राय मात्र यह है कि प्राचीन काल से भारतवर्ष की सोच इतनी वृहद् रही है। यही कारण है कि हमारा देश अपने लाभ हेतु किसी अन्य देश का अहित नहीं सोच पाता। विडंबना यह है कि जिस संसद में यह आरोप-प्रत्यारोप होते हैं उसके प्रवेश द्वार पर भी यही पंक्तियां अंकित हैं। अर्थात् चाहे सत्ता पक्ष हो या विपक्ष, सभी के पूर्वज, इसी मानसिकता का अनुसरण करते आये हैं। किंतु आश्चर्यजनक तथा शर्मसार करने वाली बात है कि जब हमारे देश में पुलवामा जैसा बड़ा आतंकी हमला होता है जिसमे विभिन्न राज्यों के, विभिन्न धर्म और जाति के जवान शहीद हुए जिनका धर्म था देश प्रेम और एक ही इष्ट था, उनका राष्ट्र। ऐसे दुख की घड़ी में भी निम्नतम स्तर छू लेने को लालायित राजनीतिक बयानबाजी ने कुछ लोगों को यह कहने पर विवश किया कि यह हमला आगामी चुनाव से पहले ही क्यों हुआ, इसकी जांच होनी चाहिए। क्या अर्थ निकाला जाना चाहिए इसका? क्या कुर्बान होने वाले वीर सैनिकों की चिताओं पर अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने वाले इन नेताओं के हृदय में लेशमात्र भी देशप्रेम का अंश नहीं बचा है? इस निम्नस्तरीय बयानबाजी से तो ऐसा ही प्रतीत होता है।

स्मरण रहे, जब अमेरिका पर आतंकी हमला हुआ था तब राजनीतिक विरोधाभासों को परे रख पूरा देश और राजनीतिज्ञ आतंकवाद के विरोध में साथ थे और एक-दूसरे पर आरोप लगाने के बदले इसका हल निकालने के लिए चिंतित थे। इसी का नतीजा है कि आज तक वहां इस कृत्य की पुनरावृत्ति नहीं हो पायी।

कुछ लोगों की राजनीतिक महत्वाकांक्षा

उनकी देशभक्ति की भावना से ऊपर है। ऐसे लोग अपने क्षेत्र में धार्मिक उन्माद वाले तत्वों को राजनीतिक शरण देते हैं और उनका इस्तेमाल अपने वोट बैंक के रूप में करते हैं। इस मानसिकता वाले व्यक्तियों की तलाश में आतंकवादी तत्व हमेशा रहते हैं और समय आने पर उनकी आड़ लेकर अपनी कार्यवाही करते हैं। आने वाले दिनों में आतंकवाद से जुड़े लोग इनके काबू से पूरी तरह बाहर हो जाते हैं। आज यह स्थिति देश के कई राज्यों में देखने को मिल रही है और कश्मीर उनमें सर्वोपरि है। सीमांत राज्यों में इस मानसिकता वाले व्यक्तियों का इस्तेमाल पड़ोसी देशों द्वारा किया जाता रहा है।

आतंकवाद धर्म के नाम पर अपनी गतिविधियों को सही साबित करने की कोशिश करता है और धर्मस्थलों को आतंकवादी गतिविधियों को गोपनीय रखने हेतु प्रयोग में लाता रहा है। यद्यपि अलग-अलग विचारधारा से जुड़े लोग अलग बातें भी करते हैं किंतु स्वर्ण मंदिर जैसे प्रमुख और पवित्र तीर्थ स्थल पर हुए आपरेशन ब्लूस्टार के जिम्मेदार लोगों और इससे जन्मी भविष्य की घटनाओं के गवाह हम सब रहे हैं। दुख की बात है कि हमने उस घटना से कोई सबक नहीं सीखा और धर्मस्थलों का राजनीतिक इस्तेमाल आज भी जारी है। यहां यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि कोई भी धर्म आतंकवाद को सही नहीं ठहराता है।

इससे बहुत करीब से जुड़ा मुद्दा है हमारे देश की जनसंख्या वृद्धि और गरीब, अशिक्षित समाज जिसके युवा बड़ी आसानी से इस रास्ते को अपना रहे हैं। इस आतंकवाद के तथाकथित ठेकेदार इन युवाओं को धर्म के नाम पर सम्मोहित कर उनके दिमाग में गहरी पैठ बना लेते हैं और फिर इस काम में झोंक देते हैं। इन जेहाद और जन्नत के ख्वाब देखने वाले मतवालों ने कभी किसी ने यह क्यों नहीं सोचा कि ये विदेशों में दूर सुरक्षित ठिकानों

पर बैठे लोग अपने भाई या बेटों को आत्मघाती हमलावर बनाकर क्यों नहीं भेजते?

एक कमजोर कड़ी है हमारे देश के सुरक्षाकर्मियों पर वी.आई.पी. कल्चर का हावी होना। अमेरिका की ओर एक बार फिर देखिएगा। एक आतंकवादी हमला और उनकी सुरक्षा व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन हुए। सबसे बड़ी बात ये रही कि हर नागरिक ने इसे सिर झुका कर स्वीकार किया क्योंकि वो जानते थे कि ये परिवर्तन उनके अपने लाभ हेतु उठाये गए कदम हैं। अब अपने देश की ओर देखें। सुरक्षा कर्मी यदि अपने काम को मुस्तैदी से करना भी चाहें तो भारी भरकम रसूख रखने वाले लोगों को सुरक्षा जांच अपनी तौहीन लगती है। उनके साथ चलने वाला दल बल उनसे दो हाथ ऊपर ही होता है। हैरानी की बात है कि सुरक्षाकर्मी के जिद पर अड़े रहकर अपना काम करने पर इसके दूरगामी परिणाम उसको ही भुगतने पड़ते हैं। संभवत: यही कारण है कि सुरक्षाकर्मी चाहकर भी अपने काम को ठीक से नहीं कर पाते हैं।

एक उल्लेखनीय पक्ष है हमारे देश की विभिन्न संस्थाओं का पूर्वाग्रह ग्रस्त होना।

मीडिया इसमें सबसे ऊपर आता है। जनसंपर्क हेतु क्रांतिकारी रूप से अग्रणी होने का दावा करने वाले सरस्वती रूप मीडिया पर आजकल धनकुबेरों का कब्जा है। मीडिया किसी भी घटना का कौन सा पक्ष उजागर करेगा और कौन सा पर्दे के पीछे रखेगा यह सब पूर्व निर्धारित होता है। इसमें प्रचार के आधुनिक साधन और तकनीक का भी बहुत बड़ा योगदान होता है। कश्मीर में हालात बद से बदतर होते चले गए किंतु मीडिया ने इस पर कभी क्यों नहीं प्रकाश डाला यह सोचने का विषय है।

इसी सूची में आगे आते हैं वे लोग जो मानवाधिकारों की बात करते हैं। यदि जिंदा पकड़े गए आतंकवादियों और उनको शरण देने के लिए सजा काट रहे व्यक्तियों पर होने वाली कार्यवाही में उनके मानवाधिकार के हितों को ध्यान में रखा जाना चाहिए तो देश के लिए अपने घर से हजारों मील दूर रेगिस्तान, बर्फीले पहाड़ और समुद्र में दुश्मन का सामना करते जवानों के शहीद होने पर उनके और उनके परिवारों के हितों के बारे में कौन सोचेगा? आतंकवादियों द्वारा निर्मम हत्या के बाद सोशल मीडिया पर अपना खौफ पैदा करने के लिए भेजें जाने वाले वीडियो, वीर जवानों की शहादत के बाद उनके शवों का अंग-भंग किया जाना, इन सब घटनाओं के बाद ये तथाकथिक मानवाधिकार रक्षा के लिए तत्पर संस्थाएं कहाँ होती हैं और इनका क्या योगदान रहता है?

इस सब से तार जुड़े हैं हमारी लचर न्याय प्रणाली के। इसको समझने के लिए आतंकवादी अजमल कसाब से बेहतर उदाहरण नहीं हो सकता। एक आतंकी जिसने निरीह जनसमूह को अपनी गोलियों का निशाना बनाया, जिसका कृत्य सी.सी.टीवी कैमरों में कैद हुआ, उसको कई वर्षों तक फैसले की प्रतीक्षा में सरकारी मेहमान बनाकर रखा गया। उसकी सुरक्षा पर लाखों रुपये खर्च किये गए और उसको फांसी की सजा दी जाए या नहीं, इस पर गर्मागर्म बहस छिड़ी। सवाल यह है कि यदि कसाब जैसे आतंकवादी को उसके मानवाधिकार मिलने चाहिए तो मारे गए निर्दोष व्यक्तियों और उनके जीवित परिवारजन इसके अंतर्गत आते हैं या नहीं? उनके मानवाधिकारों की बात कहां जाकर की जानी चाहिए।

अब बात करते हैं आम नागरिक में बसी देशभक्ति की भावना की। बहुत ही अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि हमारे देश में यह भावना मोहताज होती है आतंकी गतिविधियों में उरी या पुलवामा जैसी घटनाओं में सैनिकों की शहादत की, किसी बस या ट्रेन में विस्फोट की, किसी हवाई जहाज के अपहरण की और तब भी यह कुछ समय ही रहती है।

यह सच है कि सैनिकों का कर्तव्य सीमा और नागरिकों की सुरक्षा है किंतु एक आम नागरिक, जो सैनिक नहीं है, उसने कभी अपने कर्तव्यों के बारे में सोचा है ? हमारे अंदर देशभक्ति की भावना का हर समय जीवित होना अति आवश्यक है। साथ ही स्वयं पर अनुशासन भी होना चाहिए। हम मात्र वहीं अनुशासित होते हैं जहां हमें किसी का भय होता है या हमको कोई देख रहा होता है। यदि राष्ट्रगान को सिनेमाघरों में बजाए जाने का विरोध करने वाले लोगों को अभिव्यक्ति की आजादी की दुहाई देकर मीडिया दिखाता है तो ऐसे में उन सबके अनुसार विकास की सीढ़ी में सबसे नीचे की पायदान पर देशप्रेम को रख देना ही उचित रहेगा शायद।

आतंकवाद राजनीति अथवा धार्मिक उन्माद से जन्म लेता है या प्रेरित होता है किंतु इसकी आग को हवा देने में जो सबसे आगे रहते हैं उनमें पहला नाम है जंग के हथियारों के व्यापारी। यह सोचने की बात है कि यदि खपत नहीं होगी तो उनका व्यापार कैसे चलेगा। उनके फलने फूलने के लिए आवश्यक है कि बंदूकों से लेकर लड़ाकू विमानों तक की मांग दिन दूनी रात चौगुनी बढ़े। इस मांग के बढ़ने के लिए पड़ोसी देशों के बीच तनाव और आतंकवाद जैसे मुद्दे जन्म लेते हैं। दूसरा नाम उन विकसित देशों का है जो विश्व में अपना प्रभुत्व जमाने की होड़ में एक दूसरे से आगे निकलना चाहते हैं और अपने आप को सुपर पावर कहते नहीं अघाते।

ये सब अपने स्वार्थ के लिए दूसरे देश रूपी हरे भरे वृक्षों पर आतंकवाद की अमरबेल को रूप देते हैं। इस परजीवी पौधे का तो काम ही है कि जिस पेड़ पर उगे, उसका दाना पानी लेकर उसको कमजोर करे और स्वयं फले फूले। जरा सोचिए, आतंकवाद जहां भी लंबे समय तक पनपता रहा, वहां की संस्कृति का क्या हुआ। देश का भविष्य कहे जाने वाले बच्चों की शिक्षा का क्या हुआ। अफगानिस्तान, सीरिया के घटनाक्रम याद रखने चाहिए सबको। इसी आग में इस समय कश्मीर भी जल रहा है।

आज भारत विकास के रास्ते पर तेजी से अग्रसर है। धर्म, जाति जैसे फिजूल मुद्दों पर अड़े रहना, उनकी आड़ में अपना शक्ति प्रदर्शन करना, इन सब बातों से हमारी गति धीमी होने के अलावा और कुछ सिद्ध नहीं होगा। आज के माहौल में जरूरत है समाज के शिक्षित होने की, जनसंख्या नियंत्रण की, स्वयं अनुशासित होने की, दिलों में देशभक्ति की भावना को जगाने की और राष्ट्र प्रेम को सर्वोपरि रखने की। संसार का कोई भी धर्म आतंकवाद को बढ़ावा देने का समर्थन नहीं करता। आवश्यकता है सभी धर्मों को समान आदर देते हुए, भारतीयता की भावना को सर्वोपरि रखा जाये और एकजुट होकर इस आतंकवाद रूपी अमरबेल को समूल नष्ट कर दिया जाए। तभी हम अपने राष्ट्र रूपी वृक्ष की जड़ों को मजबूत करके उसकी विकास रूपी शाखाओं को हरा भरा रख सकते हैं।

JMJ TRAVELES
आपके शहर की शान
राजस्थान में कही पर भी सभी प्रकार की कार टैक्सी के मासिक या वार्षिक अनुबंध के लिए संपर्क करे।
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे।
मोबाइल नं. +91 9784005246

चौकिए नहीं ज्यादातर ऑनलाइन गेम या ऑनलाइन सॉन्ग या मूवी डाउनलोड की जो वेबसाइट्स है वह आतंकवादियों की मददगार कंपनियां ही चलाती है हम अनजाने में उनसे या उनके द्वारा दी गई लिंक से कभी गाने कभी फिल्म तो कभी गेम डाउनलोड कर लेते हैं और उसमें आने वाले विज्ञापनों की कीमत सीधे-सीधे कंपनियों के द्वारा आतंकवादियों को मिल जाती है।

क्या मैं भी आतंकवादी

श्रुति दीप तिवारी

चौके नहीं शीर्षक पढ़कर यह बात मेरे मन में तब आयी जब मैंने हाल ही में हुए आतंकवादी हमले के बारे में ध्यान से सोचा जाने अनजाने हम सब कहीं ना कहीं आतंकवाद का साथ दे देते हैं कैसे, आइए इस लेख के जरिए मैं आपको बताती हूं। बात जनवरी 2016 के पठानकोट एयरबेस हमले की हो, सितंबर 2016 आर्मी कैंप उरी की, नवंबर 2016 नगरोटा आर्मी कैंप हमला, जून 2016 सीआरपीएफ कौनवनोयोन हमला, अगस्त 2016 आर्मी बटालियन पर हमला, अप्रैल 2017 आर्मी कैंप पंचगम में हमला या हाल ही में हुए पुलवामा का आतंकवादी हमला अगर ध्यान से इन सभी बड़े आतंकवादी हमलों को देखें तो जो प्रमुख बात सामने आएगी वह है कि सभी हमले हमारी आर्मी पर हुए हैं आर्मी मतलब हमारी देश के रक्षा तंत्र पर एक हमले में औसतन $50000 का खर्च आता है तो यह पैसे आतंकवादियों के पास आते कहां से हैं? क्या जाने अनजाने हम इनकी मदद कर रहे हैं? जी हां, कैसे? आइए, मैं बताती हूं कि आखिर इन आतंकवादी संस्थान को पैसे मिलते कहां से हैं।

आतंकवादियों की आय का प्रमुख स्त्रोत है दान डोनेशन चैरिटी

जी हां, इस्लामिक देशों से प्रतिवर्ष 10,000 अलग-अलग तरीकों से इन आतंकवादी संस्थानों को दान के नाम पर पैसे मिलते हैं जकात करके एक परंपरा में अपनी आय का एक निश्चित भाग आप को दान करना होता है दान करना बुरा नहीं है हर एक धर्म में दान का महत्व बताया गया है दान इसलिए जरूरी है ताकि समाज का प्रत्येक वर्ग साथ में आगे बढ़े पर कुछ संस्थान इसे गलत तरीके से इस्तेमाल कर भड़का कर इसका उपयोग आतंकवादी संस्थानों में करती है यही नहीं यह संस्थान भारत व कई देशों में मदरसों को एनजीओ के नाम पर दान देती है जो यह नहीं सोचती कि एनजीओ आखिर उनमें पैसा क्यों लगा रहे हैं जबकि उनके खुद के देश में पैसा लगा सकते हैं पर यह बात इतनी गहराई से ना सोचकर उस समय सिर्फ और सिर्फ आने वाली आय के बारे में सोचा जाता है और इन एनजीओ से मदद ली जाती है यही एनजीओ यहां पढ़ने वाले बच्चों की मदद से लगाए गए पैसों का दुगना वसूल करती है और यही दान जाता है आतंकवादी संस्थानों को याद करिए कभी आपने भी दिए होंगे ऐसे ही किसी संस्था में दान जो कि चला गया आतंकवादियों के पास।

अवैध कार्य दूसरा सबसे बड़ा आय का स्त्रोत है

अवैध कार्य जैसे-ड्रग्स, जुआ-सट्टा और अवैध दारू की बिक्री जैसे कार्य से मिलने वाला पैसा भी सीधा आतंकवादियों के पास जाता है अवैध तरीके से सिनेमा की सीडी बेचना भी इन्हीं कार्यों में शामिल है जाने अनजाने हम लोग कभी कोई सीडी ले लेते हैं या कोई लिंक कॉपी कर लेते हैं जिससे मिलने वाले पैसे इन्हीं कार्य में लगाए जाते हैं रेस और सट्टो से मिलने वाले पैसे सीधे-सीधे इन्हें आतंकवादी संस्थानों के पास जाते हैं जिससे यह हथियार बारूद आज खरीदते या बनाते हैं पंजाब में आने वाला पूरा-पूरा ड्रग्स या नशा आतंकवादियों के द्वारा ही निर्यात और आयात किया जाता है यह इन नसों की मदद से हमारे युवाओं को गुमराह तो कर ही रहे हैं साथ ही इन मासूमों की जान खतरे में डाल रहे हैं पर इस लत के कारण बिना कुछ सोचे समय पैसों की तरह पानी की तरह जो पैसा बहता है वह पैसा पूरा-पूरा इन आतंकवादी संस्थाओं के पास ही जाता है एक रिपोर्ट में सामने आया कि 1993 वर्ल्ड ट्रेड सेंटर हमला में लगाया गया धन मुख्यत: एक टी-शर्ट को बेचकर कमाया गया था यह जो हम फर्स्ट कॉपिड सेकंड कॉपी सामान खरीदते हैं वह सब भी सीधा इन आतंकवादी संस्थाओं के पास जाता है तो बताइए क्या कभी कोई कॉपिड सामान खरीदा है?

तीसरा तीसरा स्त्रोत है ऑनलाइन गेमिंग

चौंकिए नहीं ज्यादातर ऑनलाइन गेम या ऑनलाइन सोंग या मूवी डाउनलोड की जो वेबसाइट्स है वह आतंकवादियों की मददगार कंपनियां ही चलाती है हम अनजाने में उनसे या उनके द्वारा दी गई लिंक से कभी गाने कभी फिल्म तो कभी गेम डाउनलोड कर लेते हैं और उसमें आने वाले विज्ञापनों की कीमत सीधे-सीधे कंपनियों के द्वारा आतंकवादियों को मिल जाती है कुछ ऑनलाइन गेम में लकी ड्रॉ तो कुछ में इनाम के तौर पर पैसे मिलते हैं कभी सोचा है कि यह कहां से आते हैं ज्यादातर इस तरह की कंपनियां पैसे इन आतंकवादियों की मदद में लगाती है। मुफ्त में भारतीय सिनेमा के गाने डाउनलोड करने वाली कुछ वेबसाइट्स सीधे-सीधे आतंकवादियों से जुड़ी हुई है यह ना सिर्फ हमें फ्री में वह हिंदी मूवी के गाने देती है साथ ही साथ मिलने वाली हमारी निजी जानकारियां भी आतंकवादियों से साझा करती है अनजाने में मैंने भी कई बार इन वेबसाइट से गाने डाउनलोड करें जो गलती मुझे बाद में महसूस हुई।

चाइना का सामान खरीदना

बहुत सही बात है यह कि जो चाइना का सामान हम सस्ता समझ कर खरीद लेते हैं वह कहीं ना कहीं हमारे आतंकवादियों की मदद करता है चाहे दिवाली हो होली हो ईद हो या क्रिसमस हो आने वाला बाजार में अधिकतर सामान चाइना का होता है हर मौसम में कसमें खाई जाती है कि चाइना का सामान नहीं खरीदेंगे पर भी जाने अनजाने पैसों की आड़ में हम चाइना का सामान खरीद लेते हैं यकीन ना हो तो अपने घर के बच्चों के खिलौनों को ही देखना जिसमें परसेंट खिलौने चाइना के होंगे प्लास्टिक का आइटम जैसे प्लास्टिक की झाड़ू भी चाइना वाली ही होती है एक स्केच पेन से लेकर एलईडी लाइट तक हम चाइना का उपयोग कर रहे हैं और अगर हम इनका उपयोग कर रहे हैं तो हम आतंकवादियों की मदद कर रहे हैं।

अवैध कंपनियों के द्वारा

कभी ना कभी आपके मोबाइल पर यह मैसेज आया ही होगा जिस पर किसी बड़ी ऑनलाइन कंपनी के नाम पर सैल के साथ लिखा होगा? 2 में लैपटॉप अगर चाहिए तो यह मैसेज 4 लोगों को फॉरवर्ड करें और साथ ही कुछ निजी जानकारियों वाला एक फॉर्म फिल करें हम सब ने यह कभी ना कभी तो किया है और अपनी निजी जानकारियां उन कंपनियों को दे दी जिसको बेचकर आए हुए पैसों का इस्तेमाल आतंकवादी संगठन करते हैं कुछ कंपनियों में चैन सिस्टम द्वारा पैसा कमाने की स्कीम सामने आती है जो थोड़े दिनों में डूब जाती है और यह डूबी हुई कंपनियां बाजार से जो पैसा उठाती है वह पैसा धूप में नहीं आतंकवादियों के पास जाता है।

इस्लामिक देशों से

इस्लामिक देश मुख्यत: इन आतंकवादी संगठनों के आय का स्रोत होते हैं इस्लामिक देशों के पास आए गए पर्यटन के पैसे का एक बड़ा हिस्सा इन्हीं आतंकवादियों की मदद के लिए दिया जाता है इसीलिए अगर हम किसी भी कारण से इन देशों में गए हैं वहां पैसा खर्च किया है तो हमने अनजाने में आतंकवादियों की मदद की है।

अन्य क्षेत्र की कंपनियों से

अवैध ही नहीं कुछ वैध कंपनियां भी आतंकवादी संगठन चलाते हैं जिनके मुख्य वह स्त्रोत होते हैं मत्स्य पालन कंस्ट्रक्शन कंपनी और कुछ स्टॉक कंपनी पैसा लगाने से पहले हम लोगों को सबसे पहले यह चेक करना चाहिए कि यह कंपनी कहां की है इसकी पूर्ण जानकारी होने पर ही हमें पैसे लगाने चाहिए अन्यथा हम अनजाने में आतंकवादियों की मदद कर जाते हैं।

उपयुक्त सभी कारणों से जो पैसे आते हैं वह आतंकवादी संगठनों के पास जाते हैं और जिससे हमें ही हानि पहुंचती है हमारे देश के रक्षक बेवजह मारे जाते हैं हमारी आर्थिक और मानसिक स्थिति कमजोर होती है और जिसका फायदा या आतंकवादी उठा लेते हैं एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हमें कभी भी दान करने बाजार से कुछ खरीदते या फिर ऑनलाइन कुछ भी कार्य करने से पहले यह चेक करना बहुत आवश्यक है कि जो चीज हम ले रहे हैं उसका स्त्रोत क्या है वह कहां से है जिस किस कंपनी का है और वह कंपनी कहां की है बेहतर होगा कि हम अपने देश का पैसा अपने देश में ही लगाएं गलत कार्यों से बच्चे खुद भी सीखें और दूसरों को भी सिखाएं क्योंकि अगर हम ऐसा नहीं करते हैं तुम हम इन आतंकवादियों की मदद कर रहे हैं अनजाने में ही सही हम भी आतंकवादी कहला रहे हैं।

भारत के अंग कश्मीर और पाकिस्तान

निलेश मालवीय

भारत-पाकिस्तान अलग-अलग राष्ट्र है, किन्तु भूगौलिक या ऐतिहासिक दृष्टि से पाकिस्तान भारत का ही अंग है। सिर्फ एक सीमा का फर्क है। लेकिन भारत-पाकिस्तान में विवाद दिन प्रतिदिन अपनी हदों को लांघता जा रहा है। जहां एक ओर भारत की आजादी के बाद भारत-पाकिस्तान में कश्मीर का मसला जैसे सूर्य की आग सा गर्म रहा है, जो समय-समय पर नफरतों की आग बरसातें रहता है। जिनका शिकार भारत के सैनिक व आम नागरिक को सहन करना पड़ता है। कश्मीर के विवाद को लेकर ना जाने कितनी बेकसुरों की जान गई, और ना जाने कितनों की ओर जाएगी। भारत-पाकिस्तान सहज एक-दूसरे के सबसे करीब व पड़ोसी देश है, किन्तु दोनों देशों के मध्य पड़ोसी तालमेल का अभाव रहा है। कश्मीर के मुद्दों को लेकर भारत-पाकिस्तान में तीन बार युद्ध हो चुके है। आतंकवाद आज के समय मे पूरी दुनिया का सबसे बड़ा परेशानी का मुद्दा बना हुआ है। जो आए दिन कोई न कोई जानलेवा हादसे करवाते ही रहता है। आतंकवाद को सिर्फ अपना खौफ फैलाना है, जो ऐसे इंसानों, युवाओं को ढूंढ़ता है, जो अपने घरों से आर्थिक रूप से मजबूर हो, या बदले की भावना का शिकारी हो। यह उन्हीं लोगों को पनाह देता है, जो मर-मिटने को तैयार हो। युवा को भ्रमित कर उनके दिलों-दिमाग मे इतना जहर भर दिया जाता है कि वह अपने जीने के उद्देश्यों से भटककर गलत रास्तों पर चल पड़ता है। 'आज का नौजवान देश में अब तक हुए बलिदानों से एक बार समझ ले तो युवा अपने देश का महत्व समझ पाएगा।

जहां एक ओर देश की सेवा में सैनिक शहीद हो जाते हैं, वहीं दूसरी और कुछ पैसों के लिए अपने ही देश का मोल लगा देते हैं। लेकिन अगर हम अपने देश के इतिहास को देखें तो अपनों की गद्दारी के कारण ही, वीर योद्धाओं को वीर गति प्राप्त हुई है। भारत में कई ऐसे योद्धाओं का जन्म हुआ, जिनके साथ सीधे युद्ध करना व जितना मानो ना मुमकिन सा होता था। भारत हमेशा से योद्धाओं की धरती रही है। जहां पर धरती को 'माँ' के रूप में पूजा जाता है। जहां पर अलग-अलग संस्कृति के लोग एक साथ भाईचारे के साथ रह-बसर करते हैं। भारत एक ऐसा देश है जहां धार्मिक विविधता और धार्मिक सहिष्णुता को कानून तथा समाज दोनों द्वारा मान्यता प्रदान की गई है। भारत के इतिहास में धर्म का संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहां पर धर्मों में एक जुटता देखने को मिलती है। किन्तु कुछ धर्म की कड़ियां ऐसी भी है, जो तालमेल बैठाने में असमर्थ रही है, कारण यही है कि विवादों के चलते मत-भेद को बढ़ावा दिया जाता है। भारत के इतिहास को देखते हुए, भारत में हमेशा सच्चाई की जीत हुई है।

माना कई अपनों के धोखे के कारण मंजिल को हासिल करने में वक्त लगा, लेकिन मंजिल (आजादी) को प्राप्त जरूर किया है।

भारत का अंश पाकिस्तान

बात करें हम वर्तमान स्थिति की तो भारत-पाकिस्तान का सबसे गर्म मुद्दा कश्मीर है, जिसके चलते दोनों देशों में तीन युद्ध हो चुके हैं, जिनमें कई नुकसान भी हुए है। युद्ध में हार का सामना करते हुए पाकिस्तान ने खुद नीति से कश्मीर को जीतने का सपना खत्म कर दिया। अब आए दिन भारत-पाकिस्तान की सरहदों पर फायरिंग चलती रहती है। जिसमें सैनिक शहीद होते रहते हैं। पिछले कई सालों से भारत मित्रता का हाथ बढ़ाता रहा है। लेकिन पाकिस्तान भारत के इस प्रस्ताव को कमजोरी समझने की भूल कर बैठा है।'पाकिस्तान क्यों ये भूल कर बैठा है, भारत का ही एक अंश है पाकिस्तान।'

पाकिस्तान में आतंकवाद को पनाह मिलती रही है, इस बात को भारत कई बार साबित कर चुका है, किन्तु अन्य देशों की नजरों में धूल झोंक कर पाकिस्तान अपने आप को बचाता रहा है।

लेकिन आतंकवाद के कारण सभी देशों में हो रहे जानलेवा हमले के कारण सभी देश परेशान हो चुके हैं। जिससे पाकिस्तान की मुश्किलें बढ़ने लगी है।

अन्ततः आतंकवादियों द्वारा किए गए सैनिकों पर हमलों का जवाब भारत ने दिया। जहां उरी व पुलवामा हमलों पर भारत ने सर्जिकल स्ट्राइक के द्वारा पाकिस्तान को यह तो जता दिया है कि अब भारत की सहनशीलता खत्म हो चुकी है। वर्तमान का भारत अब बदल गया है, जहां के नागरिक अब एक जुट होकर लड़ने को तैयार है। आतंकवाद के खिलाफ भारत के साथ-साथ अब पकिस्तान को छोड़ सभी देश खिलाफ है। भारत द्वारा लिए गए सर्जिकल स्ट्राइक के रूप में एक्शन से भारत का एक नया चेहरा सामने आया है।

'इतिहास के पन्ने आज भी चिखते-चिल्लाते हैं, भारत स्वतन्त्र देश है, बस एक आवाज कुछ संघर्ष करने की देरी है।'

आज का युवा चकाचौंध के चलते भारत छोड़ विदेशों में जीवन बिताना पसन्द करते हैं, घूमने फिरने की दृष्टि से भी युवाओं की पहली पसंद विदेश है। लेकिन एक ओर कुछ ऐसे युवा भी हैं, जो भारत के कोने-कोने में हुए ऐतिहासिक धरोहर को देखना चाहते हैं, महसूस करना चाहते हैं।

भारत में अनेकों मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे हैं, जिनमें कई चमत्कार हुए है। भारत में भगवानों में सबसे ज्यादा आस्था रखी जाती है। भारत देश एक मात्र ऐसा देश है, जहां पर रिश्तों को भी बखूबी से निभाया जाता है। भारत देश की संस्कृति को देखने विदेशी लोग भारत आते हैं। यहां के माहौल को देखते-परखते हैं। विदेशों से आए लोग अपने विदेश में जाकर यहां की संस्कृति का उल्लेख करते हैं। भारत देश की संस्कृति को बखूबी अपनाया भी जा रहा है विदेशों में। जहां भारत देश के युवा पश्चिमी संस्कृति की और अपना झुकाव बढ़ाया है। जहां एक और कई युवा अपनी संस्कृति को बरकरार रखते हुए आलेख, शिक्षित व प्रचार-प्रसार करते रहते हैं। ताकी हमारी भारत की संस्कृति पर विदेशी संस्कृति हावी ना हो जाए। भारत का अस्तित्व खूनी संघर्षों व कई बलिदानों के बाद हमें आजादी प्राप्त हुई है। जिनसे कई संस्कृति, धर्म एक होकर स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी थी। भारत में आज भी स्वतन्त्रता के लिए लड़ा जा रहा है गरीबी, आतंकवाद और भी कई मुद्दों पर। भारत में आज भी कई योद्धा है जो सैनिक के रूप में हैं, बस देखने का नजरिया अलग है।

देश के खिलाफ खड़ा युवा

जहां पर भारत को अब कोई घाव पहुंचायेगा उसे मुँहतोड़ जवाब जरूर मिलेगा। युवाओं द्वारा किये जाने वाले पथराव व दंगों, जो चंद पैसों के लिए अपना ईमान बेचकर अपनी जान, भविष्य दाव पर लगाते हैं। जो युवा अपनी भावनाओं की सीमा लांघ कर गलत विकल्प चुनता है। वह जो अपने ही देश के खिलाफ खड़ा है, जिसे उसी देश में पनाह भी मिली, तो क्यों वह युवा उसी देश के खिलाफ खड़ा है?

कुछ कारण यह भी है की मजबूरी व बहकावे के शिकार युवा अपना रास्ता बदल लेता, किन्तु अगर देश का हर युवा अपने देश के हित में सोचे व उसी कार्य मे अपना-अपना थोड़ा भी योगदान दे, बजाय बस वार्तालाप करके उस जोश को चन्द दिनों में भूलने के। आज कई ऐसे भी घर है जहाँ पिता, बड़े भाई की शहीदी के बाद उसी घर का एक जवान सैनिक में भर्ती होते है।

अपनी धरती मां की रक्षा हेतु ऐसे विशाल भारत से कौन सामने से आकर युद्ध करेगा, जो भी सामने से आएगा उसे वहीं दो गज जमीन में गाड़

आज ही ग्राहक बनिए पञ्चदूत मासिक पत्रिका के

सुनहरा मौका
ऑफर सीमित समय के लिए

पञ्चदूत पत्रिका अपने अलग-अलग मासिक अंकों में विभिन्न प्रकार के आपसे जुड़े हुए मुद्दों पर आवाज बुलंद करती है। आप इस पत्रिका के सदस्य बनना चाहते हैं तो सदस्यता के विभिन्न श्रेणियों में पञ्चदूत दे रहा है आपको विशेष ऑफर।

नाम :
जन्मतिथि :
ई-मेल :
मोबाइल नं.
डाक का पता :
पिन कोड :
राज्य :
शहर :

चेक/डीडी से भुगतान

मैं पञ्चदूत (Panchdoot) के पक्ष में रु. .... का चेक/डीडी (टिक करें) भेज रहा हूं। जिसका नम्बर................ दिनांक................ बैंक .... है।

मुझे मेरे उपरोक्त पते पर

वार्षिक ☐
द्विवार्षिक ☐
त्रैवार्षिक ☐

(राजस्थान से बाहर के चेक / डीडी पर 50/-रु. अतिरिक्त डाक खर्च के शुल्क के रूप में शामिल करें।)

सदस्यता की श्रेणियां और ऑफर

3 साल	1080	1000	80 रू.	लैपटॉप बैग
2 साल	720	580	80 रू.	टी-शर्ट
1 साल	360	300	60 रू.	-

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

फोन नं. : 01489-230125
ईमेल करें : vikram.solanki@panchdoot.com
मोबाइल नम्बर : 7976407302

इस पते पर भेजें : माणिक्य नगर, नजदीक पुलिस थाना, माण्डलगढ़, जिला भीलवाड़ा

दिया जाएगा। 'किन्तु चिंता का विषय यह है कि 'आतंकवाद' को जड़ से कैसे खत्म किया जाए, क्योंकि आज हमने चालीस आतंकवादियों को मारा कल उन्हीं के बच्चों को भ्रामित कर उन्हें बदले की भावना में आतंकवादी बना दिया जाएगा। आतंकवाद कभी जड़ से खत्म नहीं किया जा सकता है। आतंकवाद को जड़ से खत्म करने के लिए युवा पीढ़ी के प्रति जागरूकता फैलाना, जिससे वह अपने शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार आदि से परिपूर्ण हो, यही सारी सुविधाएं एक नागरिक को इंसान बनाए रखती है, उसे गलत कार्य या आतंकवाद जैसे घिनौने कार्य करने से रोकती है।

क्या मजबूरियां हैं देशद्रोह का कारण

वर्तमान समय का सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार व स्वतन्त्र आवास है। हर एक युवा यही सोचता है, उसे उसकी काबिलियत के अनुसार उसे सारी सुविधाएं प्राप्त हो लेकिन इसके विपरीत होने कारण भी कई युवा मजबूरियों के कारण देशद्रोह, पथराव, दंगा-फसाद में अपना योगदान देकर अपनी सुविधाओं को प्राप्त करता है। अपनी उम्मीदों की भावनाओं का बार-बार टूटना क्या उसे हिंसा का मार्ग चुनने को मजबूर कर रहा है। जब देश के युवाओं का ही योगदान देश बदलने के बजाय उसे बर्बाद करने में हो तो कैसे देशवासी व देश सुरक्षित रहेगा।

देश की सुरक्षा हेतु युवा पीढ़ी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान, क्योंकि राजनीति आये दिन बदलती रहती है, राजनीति के कंधों पर भार तो है इस देश का किन्तु यह देश की जनता की समझदारी से देश का गुणी प्रतिनिधि चुनें जो भारत की ताकत, सहनशीलता, एकता को बखूबी समझकर उसे पूर्ण ईमानदारी से निभाएंगे इसी दृष्टिकोण के साथ जनता उम्मीदों से एक प्रधान चुनती है। जहां कुछ ऐसे भी राजनीतिज्ञ यह सोचने में लगे रहते है कि अपना अस्तित्व कैसे बनाएं रखे है। जहां राजनीति सामाजिक सेवा व सुरक्षा के उद्देश्यों से अपना हर कार्य ईमान व देश के हित में सोचे तो भारत में सुरक्षित रहना ओर भी आसान हो सकता है। जहाँ एक इंसान गुंडा-गर्दी कर अपने राजनीति में पैर जमाते है, दावा करते हैं समाज सुधारक का किन्तु वही अपना घर भरने में लगा हो, पुत्र मोह ले चलते राजनीति में योगदान दे रहा हो। इससे देश का भला कैसे होगा, जहां जो इंसान अपनी देशभक्ति के लिए सिर्फ अपना जीवन बिताना चाहते हैं। उन्हें भी सेवा का मौका नही मिल पाता है। जहां एक ओर विज्ञान ने अपना एक अलग ही प्रचण्ड अस्तित्व बना लिया है। जैसे सोशल मीडिया यह एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा यह पता लगाया जा सकता है कि किसी भी इंसान की जानकारी आसानी से हासिल की जा सकती है, जैसे वह क्या करता है, कहां है इस प्रकार सोशल मीडिया जितना फायदेमंद है, उतना ही नुकसान दायक।

'क्योकि जहां दुश्मन सीधे आज हमारे घरों में सोशल मीडिया के द्वारा घुस सकता है। जो दुश्मन देश मे घुसने से डरता था, आज वही दुश्मन बैठे-बैठे कई हादसों को अंजाम दे सकता है।

कश्मीरी नागरिको की सुरक्षा में ना जाने कितनी सैनिकों को शहीद होना पड़ा किन्तु कश्मीर से आज भी कई ऐसे नागरिक है, जो आतंकवाद को बढ़ावा दे रहे है, कश्मीर के युवा पीढ़ी व नागरिकों को यह समझना बहुत जरूरी है,कि रक्षक और भक्षक में अंतर होता है। कश्मीरी नागरिकों में जितने इस्लाम व मुसलमान है, उन्हें भारत देश मे रह रहे अपने ही कौम के इंसानों को देखने व समझने की देरी है, ना जाने वो अमावस्या कब खत्म होगी, न जाने आतंकवाद का ग्रहण कब हटेगा ना जाने वो सूरज सा तेज प्रकाश सुकून भरे बेखौफ दिन कब आएंगे, ना जाने उस दौर की कब शुरुआत होती।

ना जाने बाकी सभी देशों के जैसे भारत-पाकिस्तान संबंध एक दूसरे मधुर कब होंगे।

ना जाने कब कश्मीर में सुकून भरी आज़ादी की हवा कब चलेगी?

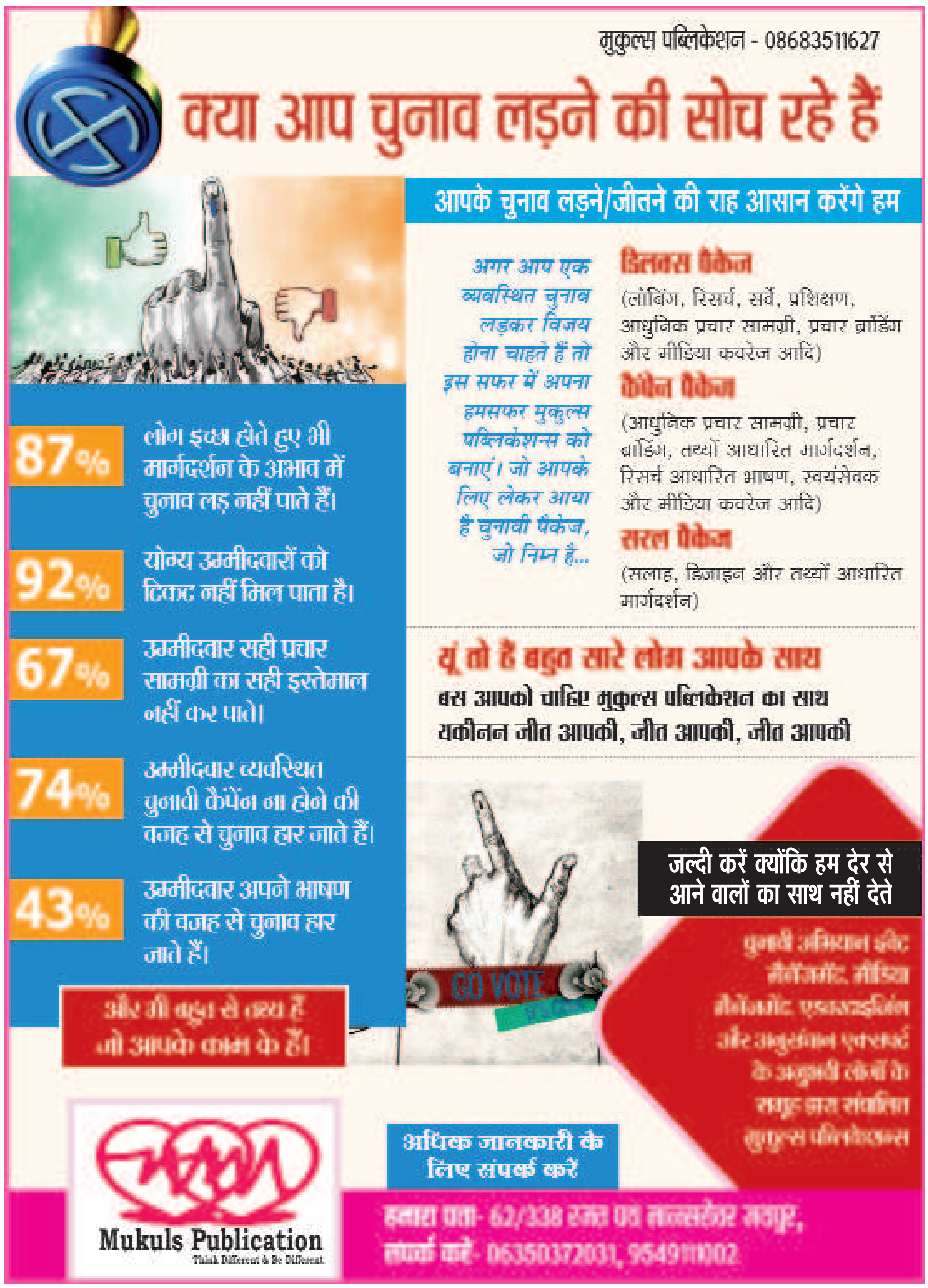

कश्मीर में अब तक का सबसे बड़ा हमला, आत्मघाती धमाके में 44 जवान शहीद, 'आज तक लाइव'!

'घृणित एवं निंदनीय वायरस : आतंकवाद'

पुलवामा में सीआरपीएफ के काफिले पर बड़ा आत्मघाती हमला, 44 जवान शहीद, घायलों की हालत नाजुक, 'राजस्थान पत्रिका'!

Pulwama Terror Attack *जम्मू-कश्मीर के पुलवामा में गुरुवार दोपहर बड़ा आतंकी हमला हुआ है। जैश-ए-मोहम्मद के आतंकियों ने आत्मघाती हमला कर सीआरपीएफ की बस को उड़ा दिया। इस हमले में 44 जवान शहीद हो गए हैं। 45 से अधिक जवान घायल हुए हैं। लगातार इस हमले के बाद नेताओं की प्रतिक्रिया आ रही है।*

मांगीलाल जोशी

जी हां, यह मनोरंजनात्मक उद्देश्य से बनाई कोई खबर या किसी फिल्म के डायलॉग्स नहीं है। यह घृणित एवं निंदनीय कृत्य 14 फरवरी का है, इस आत्मघाती हमले में 44 जवान शहीद और 45 से अधिक जवान घायल हुए है। इस आत्मघाती हमले के पीछे जैश-ए-मोहम्मद आतंकियों की बहुत बड़ी साजिश बताई जा रही है। उसके बाद दूसरे दिन आतंकवाद से निपटने और निपटाने के लिए हम सभी देशवासियों ने मिलकर क्या कदम उठाए? घोर निंदा, पाकिस्तान मुर्दाबाद-मुर्दाबाद के नारे, कैंडल मार्च और देश बंद और आता भी क्या है हम लोगों को, ओर कर भी क्या सकते हैं हम लोग। शायद इन सबसे आतंकवाद का खात्मा हो जाता तो आज बात कुछ ओर ही होती। सरहद पर हमारा कोई जवान तैनात नही होता, सरहद की फिजाओं में भाईचारे की महक पनप रही होती, पर आज ऐसा कुछ भी नहीं है। सरहद तो दूर पूरे देश में आतंकवाद को लेकर भय, आक्रोश, प्रतिशोध की भावना उपज रही है। पड़ोसी देशों में भी पुलवामा आत्मघाती हमले को लेकर निंदा की जा रही है और इसके पीछे आतंकवाद का पनाहगार अपना ही पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान को दोषी ठहराया जा रहा है। स्वाभाविक है कि आपके मन में एक प्रश्न उपज रहा होगा, आखिरकार यह आतंकवाद होता क्या है? और यह आतंकवादी लोग होते कौन है! इनमें इंसानियत होती है या हैवानियत? आइए थोड़ा विस्तार से जानते है।

आखिरकार आतंकवाद होता क्या है और यह आतंकवादी लोग होते कौन है?

आतंकवाद शब्द की उत्पत्ति आतंक शब्द से हुई है। जिसका अर्थ डर, दहशत, भय, अपना दबदबा बनाए रखना होता है और ऐसा भय जिसमें हमेशा यह अनुभूति बनी रहे कि कहीं कोई अनहोनी न घट

जाए और इस तरह का घिनौना कृत्य करने वाले या फैलाने वाले गैर सैनिक या गैर सैनिकों की टुकड़ी या सगठन को आतंकवादी कहा जाता है। आपके मन में इस वक्त क्या प्रश्न उठ रहा होगा? क्या देश में रहने वाले लोग अगर इस तरह की प्रवृति को अंजाम दे तो उन्हें आतंकवादी कहा जाएगा? तो, जी बिल्कुल भी नहीं, उन्हें नक्सलवादी कहा जाएगा। चलिए आतंकवाद के चैप्टर में थोड़ा नक्सलवाद को भी समझ ही लेते है, नक्सलवादी वो लोग होते हैं जो देश की व्यवस्था, शोषण या सरकार के कामों से परेशान होकर, किसी भूख हड़ताल या किसी अहिंसात्मक आंदोलन का हिस्सा न बनकर सीधे-सीधे मुट्ठियां भींचकर, हथियार उठाकर ललकारने वाले बगावत के ग्रुप में शामिल हो जाए तो उन्हें नक्सलवादी कहा जाएगा और इसकी शुरुआत पश्चिम बंगाल के एक छोटे से गांव नक्सलबाड़ी में साल 1967। तारीख 25 मई को हुई थी और इसकी कमान चारु मजूमदार, कानू सान्याल ने अपने हाथों में सम्भाल रखी थी। हां, हमारा आज का टॉपिक आतंकवाद पे है, तो हमें-

नक्सलवाद से हटकर आतंकवाद को ही समझना चाहिए

आतंकवाद एक वैश्विक स्तर पर घृणित एवं निंदनीय वायरस है। जिसका मर्ज किसी एक देश के द्वारा सम्भवतः नहीं है। आए दिन आतंकवाद को लेकर पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान और इस्लाम धर्म पर उंगलियां उठती रहती है। पर मेरे ख्याल से, आतंकवाद का कोई मजहब और मुल्क नहीं होता है। आतंकवाद का जन्म होता नहीं अपितु जबरदस्ती या सोच-समझकर पैदा किया जाता है, जो काम सेल्समैन का होता है, बस वही काम आतंकवादियों को बढ़ावा देने वाले संगठन का होता है। इन संगठनों का काम अलग-अलग भागों में विभाजित किया हुआ होता है, जैसे कि कोई एक क्लॉथ ऑफिस में सेल्स, एकाउंट, मीटिंग, गेस्ट, जैसे अलग-अलग डिपार्टमेंट होते हैं और उन अलग-अलग डिपार्टमेंट में स्टाफ (बन्दों) को काम उनकी होशियारी, निपुणता, काम की दक्षता, के आधार पर दिया जाता है (एकाउंट के डिपार्टमेंट में सिर्फ एकाउंट में निपुण बंदे ही बैठकर काम करते है न कि एकाउंट के डिपार्टमेंट में सेल्समैन बैठकर एकाउंट का काम कर सकते है) बस इसी तरह इन आतंकी संगठनों में भी अलग-अलग डिपार्टमेंट अथवा सौपान होते हैं और उन संगठन के हैवानों को उनकी दक्षता के आधार पर अलग-अलग काम सौपा जाता है, जिनमें प्रथम सौपान का मुख्य कार्य ऐसे बन्दों को ढूढ़ना होता है, जो जरुरतमंद हो, या कट्टरपंथी हो। आपके मन में इस वक्त यही प्रश्न उठ रहा होगा की प्रथम सौपान के सेल्स द्वारा उन जरूरतमंद, कट्टरपंथियों को कैसे ढूंढा जाता है? तो, वैसे उन जरूरतमंद, कट्टरपंथियों को ढूंढ़ना इतना आसान नहीं होता है, पर कहते हैं, 'शिद्दत से ढूंढो तो रब भी मेहर बरसाता है'।

आज का युग डिजिटल वाला युग है, इस डिजिटल ने मीलों की दूरी सेकंडों में कर दी है, पहले जो सूचना को पहुंचते-पहुंचाते महीनों बीत जाया करते थे, वहीं अब सूचना को पहुंचाना पलकों को झुकाने जितना आसान हो गया है, जितना समय हमें अपनी पलकों को बंद करने और वापस खोलने में लगता है, बस उतना ही समय फोन द्वारा किसी सूचना को पहुंचाने में लगता है, यह बात तो आप सभी जानते ही हैं पर हम जो यह इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं, हम क्या कर रहे हैं, क्या देख रहे हैं? और क्या नहीं कर रहे हैं?

आज का युग डिजिटल वाला युग है, इस डिजिटल ने मीलों की दूरी सेकंडों में कर दी है, पहले जो सूचना को पहुंचते-पहुंचाते महीनों बीत जाया करते थे, वहीं अब वह सूचना को पहुंचाना पलकों को झुकाने जितना आसान हो गया है, जितना समय हमें अपनी पलकों को बंद करने और वापस खोलने में लगता है, बस उतना ही समय फोन द्वारा किसी सूचना को पहुंचाने में लगता है, यह बात तो आप सभी जानते ही हैं पर हम जो यह इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं, हम क्या कर रहे है, क्या देख रहे हैं? और क्या नहीं कर रहे हैं? यह सभी इन्फॉर्मेशन हमारे अलावा भी दूसरे लोगों को पता होता है, वो कैसे पता होता है तो? हमें ललचाने वाले ढ़ेरों एंड्रॉयड एप्लीकेशन प्ले स्टोर, या अन्य ऐसे स्टोर पर उपलब्ध होते है, जिनकी पॉलिसी कैशबेक, मनी एडेड वाली होती है, मतलब की आप फलाना एप्लीकेशन को इंस्टॉल करके अपने मोबाइल नम्बर या अपनी ई-मेल आईडी द्वारा उसे रजिस्ट्रेशन करेंगे तो आपको 50-20 रुपए का कैशबैक मिलेगा, पर कभी सोचा उन एप्लीकेशन वालों के पास वो पैसे हमे कैशबेक रूप में देने के लिए कहां से आते हैं? जी नहीं, इतना भला कौन सोचता है, बस हम लोग यही पर मार खा जाते है, हमें तो सिर्फ उन पैसों से मतलब होता है? हमें जो यह कैशबैक रूपी पैसे मिलते है, वो इन्ही संगठनों के होते है, हम जैसे ही अपनी ईमेल आई-डी से एप्लीकेशन को रजिस्ट्रेशन करते है, तो हमारी पूरी डिटेल उस एप्लीकेशन के मालिक के पास चली जाती है और फिर हमारी पूरी जानकारी एप्लीकेशन के मालिक द्वारा इन संगठन वालों को बेच दी जाती है और बदले में ढ़ेर सारा पैसा लिया जाता है, बस वो ही पैसा हमे कैशबैक ललचावे के रूप में दिया जाता है, ताकि हम अधिक से अधिक अपनी ही कुल्हाड़ी अपने ही पैरों पर मार सकें। वैसे हाथों की पांचों उंगलियां एक जैसी नहीं होती, वैसे ही सभी एप्पलीकेशन वाले भी एक जैसे नहीं होते।

अब वो प्रथम सौपान के सेल्स उन जानकारी को एकत्रित करके उन जरूरतमंद, कट्टरपंथी लोगों को टार्गेट बनाते हैं जो वास्तव में उनके कामों को अंजाम दे सके। अब प्रथम सौपान का काम यहां पर पूरा होता है, अब उसके बाद द्वितीय सौपान का काम यहां से स्टार्ट होता है, द्वितीय सौपान का मुख्य कार्य माइंड बदलना होता है, जो काम सेल्समैन का होता है, बस वही काम द्वितीय सौपान के सेल्स का होता है, जिस तरह सेल्समैन अपनी वस्तु की तारीफ करता है वैसे ही द्वितीय सौपान के सेल्स मजहब, मुल्क के लिए कुछ कर जाने की भावना दिल में जगाते हैं या फिर पैसों का लालच देकर उन्हें खरीद लेते हैं और फिर द्वितीय सौपान में सेलेक्टेड बन्दों को तृतीय सौपान के सेल्स के पास भेजा जाता है, जहा उन्हें निर्दयता, हैवानियत का पाठ पढ़ाया जाता है, कैसे निर्दोष लोगों को टार्गेट करना है, कैसे, कहाँ और किस तरह अपनी दशहत फैलानी है यह सब

द्वितीय सौपान के सेल्स द्वारा उन बन्दों को ट्रेनिंग दी जाती है और फिर उसके बाद थर्ड सौपान में सेलेक्टेड बन्दों को फोर्थ सौपान के पास भेजा जाता है, जहां उन्हें जगह बताई जाती है, भीड़-भाड़ वाले इलाके बताए जाते हैं, उन्हें किस तरह दूसरे मुल्क में घुसना है, यह सब सिखाया जाता है और फिर उन्हें आतंकवादी की उपाधि देकर दूसरे देश में धावा बोलने के लिए विदा किया जाता है। इतना ही नहीं पड़ोसी मुल्क पड़ोसी मुल्क की शिक्षण संस्थाओं में किस तरह आतंकवाद की ट्रेनिंग दी जा रही है, इस बारे में हाल ही में नया खुलासा सामने आया था। जहां गौहर आफताब नाम के पाकिस्तानी सोशल एक्टिविस्ट ने अपना अनुभव बांटते हुए बताया था कि, 'कैसे उसे सिर्फ 12 साल की उम्र में जिहाद के लिए तैयार किया गया। टेड एण्ड टॉक में बोलते हुए आफताब ने बयां किया कि, 'कैसे वे आजाद कश्मीर पहुंचकर बंदूक उठाने को तैयार हो गए थे, मगर परिवार के प्रेम ने उन्हें रोक लिया। आफताब का परिवार 1990 के दशक में सऊदी अरब से लाहौर वापस आया। उनका एडमिशन शहर के एलीट बोर्डिंग स्कूल में कराया गया। जहां नौंवी कक्षा में उनकी मुलाकात इस्लामिक शिक्षा के टीचर से हुई, आफताब बताते हैं कि टीचर का दावा था कि उसने 80 के दशक में सोवियत के खिलाफ जंग में हिस्सा लिया था। टीचर ने सिलेबस की जानकारी बहुत कम दी, उसका पूरा ध्यान हिंदुओं, ईसाइयों और यहूदियों के खिलाफ नफरत फैलाने पर था। आफताब के अनुसार, उनका टीचर कहता था कि एक 'मोमिन' वह शख्स है दाहिने हाथ में कुरान और बाएं हाथ में तलवार लेकर चलता है ताकि अपने दुश्मनों का सिर कलम कर सके। उस टीचर ने इस हिंसा को सम्मान देते हुए 'जिहाद' का नाम दिया।

आतंकी वायरस के रोकथाम के बस दो ही उपाय

उपचार ही उपाय

जिस तरह बड़ी-बड़ी बीमारियों या फिर तेजी से फैलते वायरसों के रोकथाम के लिए, 'उपचार ही उपाय होता है। ठीक उसी प्रकार आतंकवाद जैसे वायरस को रोकने का एक ही उपाय है, समूचे देश की तरफ से आतंकवाद को मुंहतोड़ जवाब देना, उनके अड्डों को पूरी तरह से तबाह करना और आतंकवाद को पनाह देने वाले मुल्क और उनके संगठनों के समर्थकों व शुभचिंतकों पर भी कठोर से कठोर कार्यवाही की जानी चाहिए, इन व्यक्ति अथवा संस्थाओं पर वित्तीय प्रतिबंध लगाए जाने चाहिए।

आतंकवाद को पनाह देने वाले मुल्क से हर तरह का व्यवहार समाप्त करना ही जरूरी है, चाहें वो व्यवहार व्यापार के आयात-निर्यात का ही क्यो न हो?

धमाकों से सहमकर आम जनता पर बंदिशें लगाने के बजाय भारत सरकार को अमेरिका और इजराइल की तर्ज पर seek and destroy (ढूंढो और मारो) की नीति अपनानी चाहिए।

जिस तरह आतंकवाद शब्द का शाब्दिक अर्थ डर, दहशत, भय, अपना दबदबा बनाए रखना होता है, ठीक उसी प्रकार आतंकवाद को फैलाने वालों का सफाया कर उनके मन और मस्तिष्क में पलटवार का ऐसा डर बैठाना चाहिए कि कोई भी आतंकवादी या आतंकी संगठन या फिर आतंकवाद को पनाह देने वाला मुल्क, भारत और उसके नागरिकों को नुकसान पहुंचाने से पहले सौ बार सोचे। अंतरराष्ट्रीय दबाव की परवाह किए बगैर भारत सरकार को इस मुद्दे पर कठोर रुख अख्तियार करना ही होगा।

जैसे कि 21 सितंबर, 2016 को सर्जिकल स्ट्राइक और 26 फरवरी, 2019 को एयर स्ट्राइक द्वारा भारत ने समूचे विश्व को बतला दिया है, 'ये नया हिंदुस्तान है, घर में घुसेगा भी और मारेगा भी'!

भारत की छवि हमेशा से शांतिपूर्ण देश की रही है, पर अगर हम समूचे देशवासी इसी तरह शांतिपूर्ण तरीके से रहे, आतंकवाद को मुंहतोड़ जवाब नही दिया, तो शायद आने वाला वो दिन दूर नहीं, जब कोई भी मुल्क हमारे ऊपर आक्रमण कर जाएगा और हम शांति की ही अपील करते रहे जाएंगे, क्योंकि आतंकवाद जैसे वायरस का उपचार निंदा, कैंडल मार्च और बैठकर शांतिपूर्ण तरीके से हल हरगिज नहीं है।

एकरूपता उपाय

सबसे पहले हमें आने वाली पीढ़ी को आतंकवाद के विरुद्ध और मानवता के हित में तैयार करना होगा। भारत के संविधान ने सभी धर्मों को अपने धर्म के प्रचार, प्रसार व शिक्षा की स्वतंत्रता दी है, पर कई बार इसकी आड़ में बच्चों में बचपन से ही अलगाववाद की भावना भर दी जाती है।

इन संस्थानों को बन्द करने के बजाय इनमें एकरूपता लाई जाना चाहिए, साथ ही एक निगरानी प्रणाली की भी स्थापना होना चाहिए। चाहे मुस्लिम मदरसे हों, सिख स्कूल हों, मिशनरी हों या हिन्दू पाठशाला, सभी के पाठ्यक्रम में बच्चों को सभी धर्मों के बारे में अलग से पाठ रखे जाएं, जिससे सर्वधर्म-समभाव की भावना उत्पन्न हो। कई बार बच्चों में दूसरे धर्मों के प्रति गलत व बुरी धारणाएं बन जाती हैं, पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से बच्चे के दिमाग में फैली भ्रांतियां दूर की जा सकती हैं।

आतंकवाद निरोधक कानूनों की समय-समय पर समीक्षा हो, जिससे जरूरत पड़ने पर आवश्यक बदलाव या फेरबदल संभव हो। संघीय एजेंसी और खुफिया तंत्रों में बेहतर तालमेल के लिए अधिकारियों को अन्य विभागों में प्रतिनियुक्ति पर भेजा जाए, जिससे अधिकारियों में सूचना तंत्र की समझ और नेटवर्क बढ़ाया जा सके। इन धमाकों में स्थानीय लोगों की लिप्ता होने के संकेत मिले हैं और समय-समय पर ऐसे भी संकेत मिले हैं कि आतंकवादी सेना तथा अन्य महत्वपूर्ण संगठनों में घुसपैठ कर चुके हैं।

ऐसे तत्वों की पहचान की जा सकती है साथ ही आतंकवादी घटनाओं और दंगे-फसाद इत्यादि को भी रोका जा सकता है, पर उसके लिए जरूरत है एक मजबूत सूचना तंत्र स्थापित करने की, एक ऐसी एकीकृत निगरानी एजेंसी बनाने की, जिसके लोग सभी विभागों में फैले हों और जो सभी विभागों से मिली सूचना के आधार पर समय रहते संबंधित विभाग को सूचित कर सकें।

इसके साथ ही केन्द्र और राज्य सरकारों को भी दलगत राजनीति से ऊपर उठकर देश की सुरक्षा के बारे में सोचना होगा। शीर्ष नेतृत्व को कुछ कठोर कदम उठाना ही होंगे, भले ही इसके लिए उन्हें अपने राजनैतिक हित भी खतरे में क्यों न डालना पड़ें, क्योंकि नेता हो या आम आदमी सबका वजूद इस देश से है, इसकी सुरक्षा सर्वोपरि है।

भारत में अब तक आतंकी हमले

मुंबई सीरियल ब्लास्ट

12 मार्च 1993 को पूरे मुंबई में सीरियल धमाके हुए। इन धमाकों के पीछे डी कंपनी का हाथ बताया जाता है। इस हमले में 257 लोग मारे गए थे, जबकि 713 लोग घायल हुए थे।

कोयम्बटूर धमाका

14 फरवरी 1998 में इस्लामिक ग्रुप अल उम्माह ने कोयम्बटूर में 11 अलग-अलग जगहों पर 12 बम धमाके किए। इसमें 60 लोगों की मौत हो गई, जबकि 200 लोग घायल हुए थे।

बादाम बाग हमला

3 नवंबर, 1999 को श्रीनगर के बादाम बाग में हुए आतंकवादी हमले में 10 जवान शहीद हो गए थे।

जम्मू कश्मीर विधानसभा पर हमला

1 अक्टूबर 2001 को भवन जैश ए मोहम्मद ने 3 आत्मघाती हमलावरों ने विधानसभा भवन पर कार बम हमला किया। इसमें 38 लोग मारे गए थे।

भारतीय संसद पर हमला

13 दिसंबर 2001 में लश्करे तैयबा और जैश मोहम्मद के 5 आतंकवादी भारत के सबसे सुरक्षित माने जाने वाले संसद भवन परिसर में घुस गए थे। हालांकि सुरक्षा बलों ने आतंकियों को मार गिराया और आतंकी अपने मंसूबे में नाकाम हो गए थे। हमले के समय संसद भवन में 100 राजनेता मौजूद थे। इस हमले में 6 पुलिसकर्मी और 3 संसद भवन कर्मी वीरगति को प्राप्त हुए थे।

कालूचक हमला

14 मई, 2002 जम्मू कश्मीर के कालूचक में हुए हमले में 21 जवान शहीद गए थे और जबकि 36 अन्य लोगों की मौत हो गई थी।

अक्षरधाम मंदिर पर हमला

24 सितंबर 2002 में लश्कर और जैश ए मोहम्मद के 2 आतंकी मुर्तजा हाफिज यासिन और अशरफ अली मोहम्मद फारूख दोपहर 3 बजे अक्षरधाम मंदिर में घुस गए थे इनके हमले में 31 लोग मारे गए जबकि 80 लोग घायल हो गए थे।

अखनूर हमला

22 जुलाई, 2003 को जम्मू कश्मीर के अखनूर में हुए आतंकी हमले में 8 सुरक्षाकर्मी शहीद हो गए थे।

दिल्ली सीरियल बम ब्लास्ट

29 अक्टूबर 2005 में दीवाली से 2 दिन पहले आतंकियों ने 3 बम धमाके किए थे। 2 धमाके सरोजनी नगर और पहाड़गंज जैसे मुख्य बाजारों में हुए थे। तीसरा धमाका गोविंदपुरी में एक बस में हुआ। इसमें कुल 63 लोग मारे गए जबकि 210 लोग घायल हुए थे।

मुंबई ट्रेन धमाका

11 जुलाई 2006 में मुंबई की लोकल ट्रेनों में अलग-अलग 7 बम विस्फोट हुए। सभी विस्फोटक फर्स्ट क्लास कोच में बम रखे गए थे। इन धमाकों में इंडियन मुजाहिदीन का हाथ था। इसमें कुल 210 लोग मारे गए थे और 715 लोग जख्मी हुए थे।

महाराष्ट्र के मालेगांव में 8 सितंबर, 2006 को हुए तीन धमाकों में 32 लोग मारे गए और सौ से अधिक घायल हुए थे।

5 अक्टूबर 2006 श्रीनगर में हुए हमले 7 सुरक्षाकर्मी शहीद हो गए थे।

भारत और पाकिस्तान के बीच चलने वाली समझौता एक्सप्रेस में 19 फरवरी, 2007 को हुए धमाके में 66 यात्री मारे गए थे।

आंध्रप्रदेश के हैदराबाद में 25 अगस्त, 2007 को हुए धमाके में 35 मारे गए और कई अन्य लोग घायल हो गए। हैदराबाद में ही 18 मई, 2007 को मक्का-मस्जिद धमाके में 13 लोगों की मौत हो गई।

उत्तर प्रदेश में 1 जनवरी, 2008 को रामपुर में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के कैंप पर हुए हमले में आठ लोग मारे गए थे।

जयपुर विस्फोट

गुलाबी नगरी जयपुर में 13 मई, 2008 में 15 मिनट के अंदर 9 बम धमाके हुए। इन धमाकों में कुल 63 लोग मारे गए थे जबकि 210 लोग घायल हुए थे।

अहमदाबाद हमला

अहमदाबाद में 26 जुलाई, 2008 के दिन दो घंटे के भीतर 20 बम विस्फोट होने से 50 से अधिक लोग मारे गए। इस दौरान सूरत और बड़ौदा से भी बम बरामद हुए थे।

इंफाल में 21 अक्टूबर, 2008 को मणिपुर पुलिस कमांडो परिसर पर हुए हमले में 17 लोगों की मौत हो गई।

असम में धमाके

राजधानी गुवाहाटी में 30 अक्टूबर 2008 को विभिन्न जगहों पर कुल 18 धमाके आतंकियों द्वारा किए गए। इन धमाकों में कुल 81 लोग मारे गए जबकि 470 लोग घायल हुए थे।

26/11 मुंबई आतंकी हमला

26 नवंबर, 2008 को पाकिस्तान से आए 10 आत्मघाती हमलावरों ने सीरियल बम धमाकों के अलावा कई जगहों पर अंधाधुंध फायरिंग बही की थी। आतंकियों ने नरीमन हाउस, होटल ताज और होटल ओबेराय को कब्जे में ले लिया था। इस हमले में करीब 180 लोग मारे गए थे और करीब 300 लोग घायल हुए थे। आतंकवादी कसाब पकड़ा गया था, जिसे मुकदमे के बाद फांसी दे दी गई थी।

पुणे की जर्मन बेकरी में 10 फरवरी, 2010 को हुए बम धमाके में नौ लोग मारे गए थे और 45 घायल हुए थे।

बेंगलुरु के चिन्नास्वामी स्टेडियम के बाहर 17 अप्रैल, 2010 में हुए दो बम धमाकों में 15 लोगों की मौत हो गई थी।

31 मार्च, 2013 में श्रीनगर में हुए आतंकवादी हमले में 5 जवान शहीद हुए।

24 जून, 2013 को श्रीनगर में हुए आतंकवादी हमले में 8 जवान शहीद हो गए थे।

26 सितंबर, 2013 में हुए एक आत्मघाती हमले में 10 सुरक्षाकर्मी शहीद हो गए थे, इनमें ले। कर्नल बिक्रमजीत सिंह भी शामिल थे। सुरक्षाबलों ने तीन आतंकियों को भी मार गिराया था।

5 दिसंबर, 2014 में उड़ी सेक्टर में हुए हमले में 7 सैनिक शहीद हो गए थे।

पठानकोट हमला

2 जनवरी को 2015 को पठानकोट एयरबेस पर 7 पाकिस्तानी आतंकवादियों हमला कर कई लोगों को घायल कर दिया जिसमें 7 जवान शहीद हो गए थे।

गुरदासपुर हमला

पाकिस्तान की सीमा से महज 10-20 किलोमीटर दूर पंजाब के गुरदासपुर में 27 जुलाई 2015 को बड़ा आतंकी हमला हुआ। हमले में गुरदासपुर के एसपी डिटेक्टिव बलजीत सिंह सहित 4 जवान शहीद हो गए थे। पाकिस्तान से आए आतंकियों ने सबसे पहले जम्मू जा रही बस को निशाना बनाया और फिर दीनानगर पुलिस थाने में घुस गए। वहां उन्होंने अंधाधुध फायरिंग की। 11 घंटे चली लड़ाई में कुल सात लोगों की जान चली गई और 3 आतंकवादी मारे गए थे।

7 दिसंबर, 2015 में अनंतनाग में हुए आतंकवादी हमले में 6 जवान शहीद हुए थे।

25 जून, 2016 पंपोर में सीआरपीएफ के काफिले पर हुए आतंकवादी हमले में 8 जवान शहीद हुए थे।

18 सितंबर, 2016 में उड़ी सेक्टर सेना के कैंप पर हुए एक आतंकवादी हमले में कम से कम 20 जवान शहीद हो गए थे।

पुलवामा आत्मघाती हमला

14 फरवरी 2019 को हुए पुलवामा आत्मघाती हमले में 44 जवान शहीद और 45 से अधिक जवान घायल हुए थे।

जानिए कब-कब आतंकवादी हमलों से दहला भारत

14 फरवरी 2019 को जम्मू-कश्मीर के पुलवामा जिले में हुए अब तक के सबसे बड़े आत्मघाती हमले में सीआरपीएफ के 40 से ज्यादा जवान शहीद हुए। इस हमले की जिम्मेदारी आतंकवादी संगठन जैश-ए-मोहम्मद ने ली है। पुलवामा हमले की भीषणता ने भारत में हुए अन्य आतंकवादी हमलों की याद ताजा कर दी है। आइए एक नजर डालते हैं भारत में अब तक हुए बड़े आतंकवादी हमले पर, जो याद रखने जरूरी हैं....

1993 मुंबई बम धमाका

12 मार्च, 1993 को मुंबई में आंतकियों ने एक बम धमाके को अंजाम दिया। आंतकियों ने कुल 12 बम धमाके किए थे। इस धमाके में कुल 257 लोगों की मौत हुई जबकि 717 नागरिक घायल हुए थे। इस हमले का मुख्य साजिशकर्ता दाऊद इब्राहिम था।

2002 अक्षरधाम मंदिर हमला

गुजरात के गांधीनगर स्थित अक्षरधाम मंदिर में दो आंतकियों ने 24 सितंबर, 2002 को बड़ा हमला किया था। इस हमले में 30 लोगों की मौत हुई थी जबकि 80 नागरिक घायल हो गए थे। दोनों आंतकी जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े थे।

1998 कोयम्बटूर बम विस्फोट

14 फरवरी, 1998 को कोयम्बटूर में मुस्लिम कट्टरपंथी संगठन अल उम्माह ने 11 जगहों पर धमाके किए। इस संगठन ने कुल 12 बम धमाके किए। कुल 58 नागरिकों की मौत हुई जबकि 200 नागरिक घायल हुए। माना जा रहा था कि इस हमले में लालकृष्ण अडवाणी को टारगेट करने की कोशिश हुई थी।

2001 संसद हमला

भारत की राजधानी दिल्ली में आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा ने 13 दिसंबर 2001 को संसद पर बड़ा आत्मघाती हमला किया था। इस हमले में 5 आतंकवादी मारे गए थे। जबकि दिल्ली पुलिस के 6 सहित संसद के 2 सुरक्षाकर्मी शहीद हो गए थे। इसमें एक माली की भी मौत हो गई थी।

2016 पठानकोट हमला

2 जनवरी, 2016 को पंजाब के पठानकोट एयरफोर्स बेस में चार आंतकवादियों ने हमला कर दिया था। आंतकी सेना की वर्दी में घुसे थे। सभी आंतकी जैश-ए-मोहम्मद के बताए जा रहे थे। भारतीय सेना ने कड़ी कार्रवाई करते हुए सभी हमलावरों को मार गिराया। इस मुठभेड़ में 3 जवान शहीद हो गए थे।

2016 उरी हमला

जम्मू कश्मीर के उरी सेक्टर में एलओसी के पास आंतकियों ने आर्मी हेडक्वार्टर पर बड़ा हमला किया था। 18 सितंबर, 2016 को हुए इस हमले में सेना के 18 जवान शहीद हुए थे। इस मुठभेड़ में भारतीय सेना ने सभी 4 आंतकियों को मार गिराया था।

2005 दिल्ली सीरियल ब्लास्ट

दिवाली के दो दिन पहले 29 अक्टूबर, 2005 को लश्कर-ए-तैयबा ने सीरियल बम ब्लास्ट करके राजधानी दिल्ली को दहला दिया था। आंतकियों ने 3 जगह बम धमाके किए थे। इस हमले में 62 लोगों की मौत हुई थी जबकि 210 नागरिक घायल हो गए थे।

2006 बांबे बम ब्लास्ट

मुंबई की लोकल ट्रेन में आंतकियों ने 11 मिनट के अंदर 7 जगहों पर लगातार हमले हुए थे। 11 जुलाई, 2006 में हुआ ये हमला 1993 के धमाके के बाद से सबसे बड़ा धमाका था। इस धमाके में 209 लोगों की मौत हुई थी जबकि 700 लोग घायल हुए थे।

2007 समझौता एक्सप्रेस धमाका

दिल्ली से लाहौर को जोड़ने वाली समझौता एक्सप्रेस में 18 फरवरी 2007 को एक बड़ा धमाका हुआ था। बम धमाका यात्रियों से भरी दो बोगियों में हुआ था। हमले में 68 नागरिकों की मौत हुई थी जबकि दर्जनों लोग घायल हुए थे। मरने वालों में ज्यादातर पाकिस्तानी नागरिक और कुछ भारतीय भी थे।

2008 मुंबई विस्फोट

26 नवम्बर, 2008 को हुआ ये हमला इतिहास में अब तक सबसे बड़े हमलों में शुमार है। 10 आंतकी समुद्र के रास्ते से मुंबई में घुसे थे। आंतकियों ने नरिमन हाऊस, ताज होटल सहित ओबरॉय होटल पर कब्जा किया था। इस हमले में कुल 164 लोगों की मौत हुई थी जबकि 308 लोग जख्मी हो गए थे। तीन दिन चले इस मुठभेड़ में पुलिस और एनएसजी ने 9 आंतकियों को मार गिराया था जबकि अजमल कसाब को गिरफ्तार किया था। हमला आंतकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा ने किया था। जिसका मुख्य साजिशकर्ता आंतकी हाफिज सईद था।

2008 असम ब्लास्ट

30 अक्टूबर, 2008 को हुए इस हमले में 81 लोगों की मौत हुई थी जबकि 470 लोग घायल हुए थे।

2008 जयपुर बम ब्लास्ट

पिंक शहर जयपुर में 13 मई, 2008 को 15 मिनट के भीतर 9 बम ब्लास्ट हुए थे। जबकि 1 को सुरक्षाकर्मियों ने नष्ट कर दिया था। इस हमले में 63 लोगों की मौत सहित 216 से ज्यादा लोग घायल हुए थे।

धर्म के नाम पर डर फैलाना
आतंकवाद नहीं तो फिर क्या है?

'आतंकवादियों का कोई धर्म नहीं होता है।' ये बात ना जाने कब-कब और कितनी बार आपने सुनी होगी। कई बार यकीन करने को मन भी करता होगा कि इनका कोई धर्म नहीं लेकिन जब दिल दहलाने वाले हमले होते हैं और राष्ट्रविरोधी भड़काऊ संदेश वायरल किए जाते हैं तब लगता है इनका धर्म है। इस बात की तब और पुष्टि हो जाती है जब दोषियों को या कह ले आतंकियों को फांसी की सजा दी जानी तय होती है तो इनके धर्म के ठेकेदार सड़कों पर इनके बचाव की पैरवी करने उतर आते हैं। तब लगता है आतंक का धर्म है। हालांकि ऐसे मामले आतंकी घटनाओं में नहीं आते लेकिन भारत में आतंक केवल सीमा पर ही नहीं, यहां आतंक धर्मों के अंदर तक है। ये आपकी समझ पर है कि आप 'धर्म' को हिंदु, मुस्लिम सिख आदि से जोड़कर देखेंगे या किसी विचारधारा से। इस बात पर विचार किया जाना जरूरी है कि किसी भी धर्म को मानने वाले आतंकवादी सैकड़ों निर्दोष लोगों की जान लेने के लिए खुद को विस्फोट से उड़ाने में कोई संकोच नहीं करता? बल्कि आनंद का अनुभव करता है। ऐसा नहीं है कि हर मुसलमान आतंकी है या हर हिन्दू। पर ये बात हमें माननी पड़ेगी की इन सब डर के पीछे धर्म का एक बहुत बड़ा हाथ है। इस कलयुगी दुनिया में ऐसा कौन है जो शक्ति और नियंत्रण नहीं चाहता। आज के समय में लोगों के धर्म के नाम पर कट्टर बनाकर अपना उल्लू सीधा करने के लिए एक बड़ी फौज खड़ी की जा रही है। हममें से कितनों ने आतंकवाद और आतंकियों की अलग-अलग परिभाषा को जन्म दिया है। किसी ने कहा, वह अशिक्षित हैं, बेरोजगार है या और कुछ लेकिन ऐसा नहीं। लोग चाहे कितना भी पढ़-लिख ले समझदार बन जाये लेकिन अगर उनके जहन में धर्म की जड़ें गहरी है तो उनका ब्रेनवॉश करना कोई मुश्किल काम नहीं। यही तो कारण है कि चाहे आतंकवाद का समर्थन ना करे लेकिन याकूब मेमन या बुरहान वानी की मौत पर हजारों की तादाद में इकठ्ठा जरूर हो जाते हैं। ना जाने क्यों हम अभी तक ये मानते नहीं है कि आतंकवाद किसी भी मुल्क में जन्म ले रहा हो लेकिन वो अपने ही धर्म की वजह से कट्टरता के रास्ते पर है। ऐसे कई बुद्धिजीवी लोग भी जो इस बात का समर्थन तक नहीं करेंगे। आतंकी घटनाओं को छोड़ते हुए हम बात करते हैं उन घटनाओं की जो देश के अंदर के

पुलवामा हमले के बाद सोशल मीडिया पर कई तरह की पोस्ट वायरल हुई जिसमें से अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का एक छात्र जो कश्मीर का रहने वाला था, ट्वीट पर #howsthejaish के हैशटैग से नफरत की एक दीवार खड़ी कर देता है। देखते ही देखते सोशल मीडिया पर लोग मुसलमानों को कोसने लगें। कश्मीर को भद्दी गालियां देने लगें। इस हमले ने शहीद परिवारों को तोड़कर रख दिया वहीं उन्हें हौसला देने के बजाए नेता हो, पब्लिक या सोशल मीडिया उन्हेंने अपनी ही एक नफरत की जंग शुरू कर दी।

इलाकों में घटी, जिसमें मॉब लीचिंग, गौहत्या पिछले पांच सालों का सबसे चर्चित मुद्दा रहा है। ज्यादातर मामले हिंदू और मुसलमान दो धर्मों से जुड़े हुए रहे। दूसरे धर्म की कट्टरता का पुरजोर विरोध करना और अपने धर्म की कट्टरता की वजह से फैलते आतंक को तर्क दे देकर सही ठहराना भी आतंकवाद का समर्थन करने जैसा है लेकिन इसबात को कितने लोग भलीभांति समझ पाते हैं ये भी जरूरी है। एक गैर सरकारी समूह 'साउथ एशिया टेरेरिज्म साल 2014 से 2018 तक भारत में 388 'बड़े' हमलों (धर्म के नाम पर) को अंजाम दिया जा चुका है। पोर्टल ने सरकार के आंकड़ों और मीडिया रिपोर्ट्स की मदद से ये विश्लेषण तैयार किया है। आपको बता दें, ये वो हमले जो देश के अंदर के इलाकों में हुए हैं।

धर्म आतंकवाद को बढ़ावा देता सूचना-तंत्र

पुलवामा आतंकी हमले में शहीद हुए 40 जवानों में जम्मू-कश्मीर के राजौरी के रहने वाले नसीर अहमद भी शामिल हैं लेकिन इनकी बहादुरी के चर्चे तो दूर इनका जिक्र भी बहुत कम सुनने में आया। अब इसके पीछे का कारण साफ है कि हमारे लोग और सूचना-तंत्र इस पूरे घटनाक्रम को एक धर्म के नजरिए से भी देख रहा है। आदिल

ना जाने क्यों हम अभी तक ये मानते नहीं है कि आतंकवाद किसी भी मुल्क में जन्म ले रहा हो लेकिन वो अपने ही धर्म की वजह से कट्टरता के रास्ते पर है।

अहमद डार, आज भारत इस नाम को जानता है मुझे नहीं पता कि उसे जन्नत की हूरें मिलेंगी कि नहीं लेकिन पूरे भारत की नफरत मिलने के साथ उसने एक धर्म के बीच भी खाई खींच दी। जिसकी भरपाई होती नजर नहीं आ रही। डार अपने बनाए वीडियो में भारत के सारे मुसलमानों को मुशरिक (इस्लाहम का पालन न करने वाला) कहने वाला कहता, उसे कश्मीर या आजाद कश्मीर नहीं चाहिए था। उसे भारत के हुक्मरानों को सबक सिखाना था जो उसके हिसाब से मुसलमानों को पश्चिमी सभ्यता में रंग रहे हैं। अगर उसे मुसलमानों की फिक्र होती तो शायद उसे यह भी पता होता कि पैरा मिलिट्री के उस काफिले में कई मुसलमान सैनिक भी थे जिनका जिक्र उस तरह से नहीं हुआ जैसा होना चाहिए था। सोचनीय विषय है पाकिस्तान या अन्य इस्लामिक देशों में कट्टर मुस्लिम व्यक्ति के ऊपर डार के इस वीडियो का क्या असर हुआ होगा। या फिर उन मदरसे बच्चों पर जिनको तालिम के नाम पर धर्मविरोधी या राष्ट्रविरोधी बनने की सीख दी जाती है।

सरहदी रेखाएं धर्मों में क्यों?

पुलवामा हमले के बाद सोशल मीडिया पर कई तरह की पोस्ट वायरल हुई जिसमें से अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का एक छात्र जो कश्मीर का रहने वाला था, ट्वीट पर #howsthejaish के हैशटैग से नफरत की एक दीवार खड़ी कर देता है। देखते ही देखते सोशल मीडिया पर लोग मुसलमानों को कोसने लगें। कश्मीर को भद्दी गालियां देने लगें। इस हमले ने शहीद परिवारों को तोड़कर रख दिया वहीं उन्हें हौसला देने के बजाए नेता हो, पब्लिक या सोशल मीडिया उन्होंने अपनी ही एक नफरत की जंग शुरू कर दी। चिंतन करने वाली बात, जो रेखाएं सरहद पर है वो हमारे दिलों में क्यों हैं। अगर हम देशभक्ति और राष्ट्रहित की बात करते हैं तो धर्म कहां से बीच में आया। धर्म-धर्म के राग में हम अपनी इंसानियत खोते जा रहे हैं। महीना भर हो चुका है पुलवामा हमले को ये दावा है मेरा आपकी देशभक्ति को की आपको शहीद जवानों के नाम तक याद नहीं होंगे लेकिन आप एक सुर में धर्म को गाली जरूर दे सकते हैं। बुद्धिजीवी बनिए लेकिन अपनी सोच को विराम देकर उस पर चिंतन भी साथ में कीजिए।

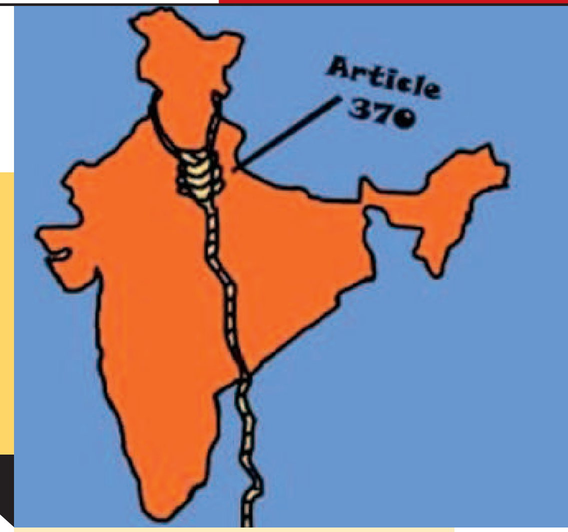

धारा 370 : जम्मू कश्मीर के विकास का अहम रोड़ा

डॉ. श्यामप्रसाद मुखर्जी ने जम्मू कश्मीर मामले पर नेहरू का विरोध करते हुए कहा था, 'आप जो करने जा रहे हैं, वह एक दिन नासूर बन जाएगा और किसी दिन देश को विखंडित कर देगा। यह प्रावधान उन लोगों को मजबूत करेगा, जो कहते कि भारत एक देश नहीं, बल्कि कई राष्ट्रों का समूह है।' आज घाटी में जो हालात हैं, उन्हें देखकर लगता है कि मुखर्जी की 1952 में कहीं गई वो बात गलत नहीं थी? धारा 370 के कारण ही राज्य मुख्यधारा से जुड़ने की बजाय अलगाववाद की ओर मुड़ गया। यानी देश के अंदर ही एक मिनी पाकिस्तान बन गया, जहां तिरंगे का अपमान होता है, देशविरोधी नारे लगाए जाते हैं और भारतीयों की मौत की कामना की जाती है। ऐसा हर कश्मीरी नहीं चाहता लेकिन वो कश्मीरी जरूर चाहता है जो बोली पाकिस्तान की बोलता है और खाता भारत का। साल 2014 के लोकसभा चुनावों के दौरान इस बात की खूब चर्चा थी कि बीजेपी सत्ता में आई तो कश्मीर से धारा 370 जरूर हटा दी जाएगी लेकिन बीजेपी का हाल पीडीपी के गठबंधन तक कांग्रेस जैसा बना रहा।

कहा जाता है, धारा 370 को लागू करते समय नेहरू ने भरोसा दिया था कि यह अस्थायी व्यवस्था है, जो समय के साथ खुद समाप्त हो जाएगी, लेकिन यह खत्म होने की बजाय परमानेंट हो गई। कहा ये भी जाता कि खुद संविधान निर्माता भीमराव अंबेडकर ने भी इस धारा का पुरजोर विरोध किया था।

कश्मीरी जानकारों का मानना है कि धारा 370 के चलते ही यहां की बेटियों को अपने हक से वंचित रहना पड़ता है। ये ही नहीं, केंद्र इस जम्मू कश्मीर को आंख मूंदकर पैसे देता है, फिर भी राज्य में उद्योग-धंधा खड़ा नहीं हो सका। यहां पूंजी लगाने के लिए कोई तैयार नहीं, क्योंकि यह धारा आड़े आती हैं। उद्योग का रोजगार से सीधा संबंध है। भारत का हिस्सा होने के बाद भी जम्मू कश्मीर की हालात एक दीन-हीन राज्य जैसी हो चुकी है।

हालांकि पुलवामा हमले के बाद केंद्र सरकार ने अलगाववादी नेताओं की सुरक्षा और उन्हें पैसा देना बंद कर दिया है। खबर ये भी है कि सरकार ने इनके 80 से ज्यादा ठिकानों को सील भी कर दिया है।

इतना सबकुछ करने के बाद घाटी से आतंकवादी गतिविधियां कम होने का नाम नहीं ले रही। कश्मीरी पंडित अपना हक चाहते हैं और कश्मीर रोज-रोज के हमले से आजादी चाहता है। ऐसे में इसका एकमात्र बड़ा समाधान जो है वो धारा 370 का पूरी तरह खत्म होना है। जानकारों का कहना है कि जम्मू कश्मीर सरकार इस मुद्दे को इसलिए नहीं उठाती क्योंकि उनका हुकूमत का एकमात्र सहारा ये ही और केंद्र सरकार इस मुद्दे को इसलिए नहीं छेड़ती क्योंकि उसको डर है ऐसा करने पर इस धारा के समर्थक सड़कों पर ना उतर आए और किसी तरह के दंगों को अंजाम ना दे दें। अब खौफ को खत्म करने के लिए सरकार को अपना सख्त रूख अपनाना होगा। वरना कश्मीर का विकास कभी नहीं होगा।

पुलवामा हमले के बाद से धारा 370 को हटाने की बात जोरों पर है। आइए, आपको बताते हैं क्या है धारा 370 और यह कैसे एक देश को दो हिस्सों में बांटती है।

क्या है धारा 370

भारतीय संविधान की धारा 370 जम्मू-कश्मीर राज्य को विशेष दर्जा प्रदान करती है। जो जम्मू-कश्मीर को भारत में अन्य राज्यों के मुकाबले विशेष अधिकार प्रदान करती है। भारतीय संविधान में अस्थायी, संक्रमणकालीन और विशेष उपबन्ध सम्बन्धी भाग 21 का अनुच्छेद 370 जवाहरलाल नेहरू के विशेष हस्तक्षेप से तैयार किया गया था।

क्यों बनी धारा 370

साल 1947 में भारत-पाकिस्तान के अलग हो जाने के बाद, जम्मू कश्मीर की सत्ता पर राजा हरिसिंह का हक था। वह राज्य में पूर्ण स्वतंत्रता चाहते थे लेकिन उसी दौरान पाकिस्तान देश के समर्थक कबीलाई ने जम्मू कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। उस दौरान राजा ने भारत के सामने मांग रखी की उसे भारत में शामिल कर लिया। जानकारी के मुताबिक, उस समय भारत की आपातकालीन स्थिति इतनी अच्छी नहीं होने के कारण कश्मीर को भारत में शामिल करने के लिए पूर्ण रूप से तैयार नहीं था। जिसके साथ ही संविधान सभा में गोपालस्वामी आयंगर ने धारा 306ए को पेश किया जो कुछ समय बाद धारा 370 के रूप में जानी-जाने लगी। इस धारा के कश्मीर में लागू होने से उसे विशेष राज्य का दर्जा मिला।

जम्मू कश्मीर के पास क्या विशेष अधिकार हैं

- धारा 370 के प्रावधानों के मुताबिक संसद को जम्मू-कश्मीर के बारे में रक्षा, विदेश मामले और संचार के विषय में कानून बनाने का अधिकार है।
- किसी अन्य विषय से संबंधित कानून को लागू करवाने के लिए केंद्र को राज्य सरकार की सहमति लेनी पड़ती है।
- इसी विशेष दर्जे के कारण जम्मू-कश्मीर राज्य पर संविधान की धारा 356 लागू नहीं होती। राष्ट्रपति के पास राज्य के संविधान को बर्खास्त करने का अधिकार नहीं है।
- 1976 का शहरी भूमि कानून भी जम्मू-कश्मीर पर लागू नहीं होता।
- भारत के अन्य राज्यों के लोग जम्मू-कश्मीर में जमीन नहीं खरीद सकते हैं। धारा 370 के तहत भारतीय नागरिक को विशेष अधिकार प्राप्त राज्यों के अलावा भारत में कहीं भी भूमि खरीदने का अधिकार है।
- भारतीय संविधान की धारा 360 यानी देश में वित्तीय आपातकाल लगाने वाला प्रावधान जम्मू-कश्मीर पर लागू नहीं होता।
- जम्मू-कश्मीर का भारत में विलय करना उस वक्त की बड़ी जरूरत थी। इस कार्य को पूरा करने के लिए जम्मू-कश्मीर की जनता को उस समय धारा 370 के तहत कुछ विशेष अधिकार दिए गए थे। इसी की वजह से यह राज्य भारत के अन्य राज्यों से अलग है।

धारा 370 की बड़ी बातें

- जम्मू-कश्मीर का झंडा अलग होता है।
- जम्मू-कश्मीर के नागरिकों के पास दोहरी नागरिकता होती है।
- जम्मू-कश्मीर में भारत के राष्ट्रध्वज या राष्ट्रीय प्रतीकों का अपमान अपराध नहीं है। यहां भारत की सर्वोच्च अदालत के आदेश मान्य नहीं होते।
- जम्मू-कश्मीर की कोई महिला यदि भारत के किसी अन्य राज्य के व्यक्ति से शादी कर ले तो उस महिला की जम्मू-कश्मीर की नागरिकता खत्म हो जाएगी।
- यदि कोई कश्मीरी महिला पाकिस्तान के किसी व्यक्ति से शादी करती है, तो उसके पति को भी जम्मू-कश्मीर की नागरिकता मिल जाती है।
- धारा 370 के कारण कश्मीर में रहने वाले पाकिस्तानियों को भी भारतीय नागरिकता मिल जाती है।
- जम्मू-कश्मीर में बाहर के लोग जमीन नहीं खरीद सकते हैं।
- जम्मू-कश्मीर की विधानसभा का कार्यकाल 6 साल होता है। जबकि भारत के अन्य राज्यों की विधानसभाओं का कार्यकाल 5 साल होता है।
- भारत की संसद जम्मू-कश्मीर के संबंध में बहुत ही सीमित दायरे में कानून बना सकती है।
- जम्मू-कश्मीर में महिलाओं पर शरियत कानून लागू है।
- जम्मू-कश्मीर में पंचायत के पास कोई अधिकार नहीं है।
- धारा 370 के कारण जम्मू-कश्मीर में सूचना का अधिकार (आरटीआई) लागू नहीं होता।
- जम्मू-कश्मीर में शिक्षा का अधिकार (आरटीई) लागू नहीं होता है। यहां सीएजी (CAG) भी लागू नहीं है।
- जम्मू-कश्मीर में काम करने वाले चपरासी को आज भी ढाई हजार रूपये ही बतौर वेतन मिलते हैं।
- कश्मीर में अल्पसंख्यक हिन्दूओं और सिखों को 16 फीसदी आरक्षण नहीं मिलता है।
- ऐसे तो केंद्र सरकार जब-जब कानून बनाती है उसे किसी राज्य की अनुमति लेने की जरूरत नहीं पड़ती लेकिन जब बात कश्मीर की होती है तब केंद्र सरकार को राज्य की सरकार से अनुमति लेनी जरूरी होती है।
- देश में राष्ट्रपति का दर्जा सबसे बड़ा है लेकिन कश्मीर मामले में राष्ट्रपति शक्तिहीन हैं।

अब श्रीगंगानगर में
24x7 आपातकालीन सेवाएँ फार्मेसी एम्बयूलेंस
मेदांता
दी मेडिसिटी
जीवन को समर्पित
एस.एन सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल
- बाईपास सर्जरी
- वाल्व सर्जरी
- एन्जियोप्लास्टी
- एन्जियोग्राफी
- पेसमेकर लगवाना
- न्यूरो सर्जरी
- स्पाईन सर्जरी
- ट्रोमा एवं हेड इंजरी
- घुटना एवं कूल्हा प्रत्यारोपण
- हर तरह के फैक्चर के ऑप्रेशन
- ऑर्थो स्कोपी सर्जरी
नाथावाली, हनुमानगढ़-सुरतगढ़ बाईपास
श्रीगंगानगर (राजस्थान)
मो. 74130-34560, 0154-2970360

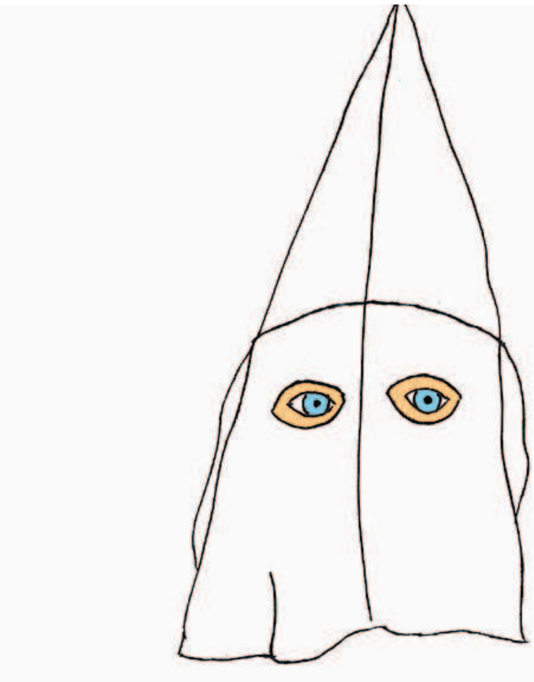

आतंकी संगठनों का सबसे बड़ा टूल मीडिया

अगर आपको याद हो 24 दिसंबर, 1999 का कंधार विमान अपहरण कांड, ये वो वक्त था जब 180 लोगों की जिनमें बड़ी संख्या में भारतीय भी मौजूद थे उनकी जान बचाने के लिए भारत ने तीन खूंखार आतंकियों को रिहा किया था। शायद भारत दूसरा रास्ता इस दौरान निकाल सकता था लेकिन मीडिया और देशवासियों ने सड़क पर उतरकर ऐसा माहौल बनाया कि सरकार को मसूद अजहर, अहमद जरगर और शेख अहमद उमर सईद को रिहा करना पड़ा।

14 फरवरी पुलवामा हमले के बाद से भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव की स्थिति बनी हुई है। इस स्थिति को जहां दोनों मुल्कों को कम करने जरूरत है। वहीं एक ऐसा तंत्र है जो इसे खत्म होने नहीं देना चाहता। बिल्कुल आप सही समझे मीडिया ही दोनों मुल्कों के बीच उपचे तनाव को खत्म नहीं होने देना चाहता। लगातार एंकर चीख-चीख कर बता रहे हैं कि अब भारत को युद्ध की तैयारी करनी चाहिए? भारतीय मीडिया के ये बोल उसे किसी तरह की शाबाशी की और नहीं बल्कि बदनामी की गर्त में ले जा रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं, ये पत्रकारिता के लिए सबसे बुरा वक्त है। इसी कारण अब मीडिया चैनलों के एंकरों को खलनायकों के रूप में देखा जाने लगा है और अंतराष्ट्रीय मीडिया हमारी खिल्ली उड़ाने में लगा है। देश के नेता अंतराष्ट्रीय मीडिया जैसे- गार्जियन, वाशिंगटन, रायटर्स आदि की रिपोर्ट पर भरोसा जताते हैं ना कि भारतीय मीडिया की रिपोर्ट्स पर। इसका सबसे बड़ा उदाहरण एयर स्ट्राइक रहा। सच बात तो ये है कि पत्रकार और उसकी पत्रकारिता अपने उसूल भूल गई है। मीडिया अपनी तरह काम नहीं करके एक प्रोपेगेंडा मशीन में तब्दील हो गई है। जो एक विचारधारा के साथ खड़ा है। इससे मीडिया खबरों की सच्चाई की नहीं बल्कि एक विचारधारा का प्रचार-प्रसार कर रहा है। देशभक्ति का चोला पहनकर युद्धोन्माद फैला रहा है। पत्रकार के विचारों से हैरानी तो तब होती है जब किसी मंच पर बोलते हुए कहता है कि पत्रकारिता जैसा पवित्र पेशा अब बचा ही नहीं है। एंकरिंग पर सवाल पूछने पर जवाब मिलता है कि एंकर अब मुद्दों पर बहस करने से ज्यादा टीवी पर एक्टिंग करने के बारे में ज्यादा सोचता है। जब ऐसे सवाल के जवाब एक पत्रकार दे, जो एक बड़े मीडिया संस्थान का एंकर है तो आप उसके जवाब सुनकर कैसी राय बनाएंगे?

मीडिया की समस्या ये है कि आतंकवादी हमलों या अन्य खबरों के बाद वो निरपेक्ष और गंभीर भूमिका निभाने के बजाय फंतासियों और संवेदनाओं से लबरेज, कवरेज को जारी रखती है जबकि उस एक वक्त सिर्फ और सिर्फ खाली सूचनाओं और सूचनाओं के विश्लेषण की जरूरत होती है। ना कि टीआरपी की रेस में आगे निकलने की।

अगर आपको याद हो 24 दिसंबर, 1999 का कंधार विमान अपहरण कांड, ये वो वक्त था जब 180 लोगों की जिनमें बड़ी संख्या में भारतीय भी मौजूद थे उनकी जान बचाने के लिए भारत ने तीन खूंखार आतंकियों को रिहा किया था। शायद भारत दूसरा रास्ता इस दौरान निकाल सकता था लेकिन मीडिया और देशवासियों ने सड़क पर उतरकर ऐसा माहौल बनाया कि सरकार को मसूद अजहर, अहमद जरगर और शेख अहमद उमर सईद को रिहा करना पड़ा। अगर उस वक्त मीडिया ने भावनाओं में बहकर कवरेज नहीं की होती तो शायद पुलवामा हमले, उरी हमले, 26/11 जैसे हमलों को रोका जा सकता था। उस वक्त की कवरेज देखकर कोई भी बाहर का व्यक्ति ये सवाल कर सकता था कि देश के टीवी चैनल और अखबार किसके लिए काम कर रहे हैं अजहर मसूद के लिए या फिर देश की अस्मिता के लिए? मुझे मालूम है इस बात से कई

लोगों को मिर्ची लग सकती है लेकिन सोचने वाली बात है यदि आप आतंक की जंग को खत्म करना चाहते हैं तो आपको एक बड़ी कुर्बानी देनी होगी। रोज सीमा पर शहीद होने वाले जवान का खून इतना भी सस्ता नहीं जितना सस्ता हमने अपनी बातों में बना दिया है।

पत्रकार बनें कंटेंट राइटर

आज की पत्रकारिता को यदि कंटेंट पत्रकारिता कहा जाए तो कुछ गलत नहीं होगा। क्योंकि प्रिंट हो, डिजिटल या टीवी। हर जगह ऐसे शब्दों का चयन किया जा रहा है जो इंसानी दिमाग पर काफी बुरा असर डाल रही है। एक साधारण सी खबर के लिए पत्रकार भड़काऊ शब्दों का प्रयोग कर रहा, भड़की हुई ब्रेकिंग हैंडलाइन बना रहा है। ये सब किस लिए सिर्फ अन्य मीडिया संस्थानों से खुद को अलग दिखाने के लिए। फिर ये कहना सही है कि आज पत्रकारिता के नाम पर कंटेंट पत्रकार तैयार किए जा रहे हैं जो तड़कती-भड़कती खबरें और पैकेज बना सकें। पत्रकार की विश्वसनीयता, जिम्मेदारी और नैतिकता आज भारतीय पत्रकारिता से खत्म हो रही है। जब वर्तमान ऐसा तो सोचिए भविष्य कैसा होगा?

फिक्शन में फंसी पत्रकारिता

फिक्शन मतलब-कल्पना। ठीक वैसी कल्पना जो टीवी चैनल के पास किसी स्टोरी के फुटेज नहीं होने पर या फिर किसी आधी-अधूरी सूचना पर ग्राफिक्स की मदद से आपको पूरी फिक्शन स्टोरी दिखाई जाती है और आप उसे टकटकी निगाहों से देखते रहते हैं। शायद आपको मालूम न हो कि फिक्शन स्टोरी का कोई भविष्य नहीं बल्कि ये पत्रकारिता के लिए जितनी घातक है उतनी देखने वालों के लिए भी। आज पत्रकारिता का नहीं फिक्शन का दौर है। एक ऐसा फिक्शन, जिसे कभी बेतरतीबी से तो, कभी बहुत ही दहशत के रूप में दिखाई जाएगी। सोचिए, ये पत्रकारिता हमें और हमारे देश को किस ओर ले जाएगी।

कच्ची-पक्की खबरों में उलझी पत्रकारिता

सोशल मीडिया के दौर में, जहां सभी को पत्रकार बनने की खुली आजादी है वहां अधपक्की-कच्ची खबरों का प्रसार बड़ी तेजी हो रहा है। बंगाल हिंसा, उत्तरप्रदेश हिंसा राजसंमद हिंसा ऐसे कई ताजे उदाहरण है जो साबित करते हैं कि आज की पत्रकारिता कच्ची-पक्की खबरों में उलझकर रह गई है। यहां सत्यता की जांच से पहले ब्रेकिंग खबर चलाना जरूरी हो गया है और खबर झूठी निकलने पर माफी मांग लेना एक सस्ता रास्ता। अब हर पत्रकार के पास अपनी पत्रकारिता को लेकर संभलना ही कल हमारे बचने का एकमात्र माध्यम है। कहा जा सकता है कि आज संभलने की इजाजत हमें खुद वर्तमान की समस्या दे रही हैं। जो कल हमें मौका न दे संभलने का।

आतंकी संगठनों का सबसे बड़ा टूल मीडिया

सेना के पराक्रम को देखाने के चक्कर में मीडिया ये भूल जाती है कि वह अपनी कवरेज में क्या-क्या और कैसे-कैसे आतंकियों को खुद इसकी सूचना दे रही है कि हमारे पास क्या-क्या है और हम उन्हें किस तरह जवाब दे सकते हैं। 26/11 के हमले के दौरान सेना प्रमुख ने कहा था कि, 'मीडिया कवरेज हमारे लिए आतंकवादियों से ज्यादा मुसीबत वाली रही। कैमरे की आंखों से आतंकवादी वो सब देख रहे थे जो हम दिखाना नहीं चाहते थे वो सब सुन रहे थे जो हम सुनाना नहीं चाहते थे, ये गैर-जिम्मेदाराना है।' अब जब मीडिया को इतनी बड़ी बात समझ नहीं आई तो मीडिया कौनसे चौथे स्तंभ का बखान करता है। मीडिया जिस लोकतंत्र के खतरे की बात करता है उस खतरे का कारण मीडिया खुद बना बैठा है।

एक टीआरपी की रेस में अव्वल आने के चक्कर में वह अपना सबकुछ दांव पर लगा बैठा है। हाल ही घटना पर गौर कीजिए, पुलवामा हमले के बाद, मीडिया चैनल चीख-चीखकर बता रहे हैं भारतीय सेना पाकिस्तान सेना से कितनी मजबूत है? अगर हमला होता है तो हम अपना बचाव कैसे और किस-किस तरह के हथियार का इस्तेमाल कर सकते है। मीडिया की ये जानकारी आतंकवादियों के लिए कितनी अहम है। इस जानकारी को आधार बनाकर अगर देश में कोई बड़ा हमला हो जाता है तो मीडिया किस पर सबसे पहले बरसेगी? पाकिस्तान पर, आतंकियों पर, या देश की सुरक्षा एजेंसियों पर, सरकार पर, सेना पर किस पर? सोचने के लिए सवाल आपको दिया और आपका जवाब भी ये होगा कि मीडिया सबसे पहले सरकार और सुरक्षा एजेंसियों की खामियां निकालेगी, एक्सपर्ट से इस पर राय मांगेगी, लेकिन कभी नहीं सोचेगी की इस घटना की दोषी वो भी उतनी है जितना वह दोष अन्य चीजों को दे रही है।

शायद इस बात पर यकीं करना कठिन हो लेकिन ये सच है कि आतंकवादी संगठन भारत ही नहीं दुनिया भर में हो रहे आतंकवादी हमलों में मीडिया का इस्तेमाल एक टूल की तरह कर रही हैं वो टूल जो किसी घटना से पैदा हुई दहशत को आगे ले जाने का काम करती है। अगर गंभीरता से देखा जाए तो सोशल मीडिया और मीडिया चैनल के बढ़ते प्रभाव के बीच समूची दुनिया में आतंकवादी हमलों में इजाफा हुआ है।

एक उदाहरण पेश करती हूं, अभिनंदन वर्धमान की रिहाई पर पाकिस्तान ने अपने ऑफिशियल अकाउंट पर अभिनंदन का एक वीडियो 17 से 24 कट्स के साथ जारी किया। जिसमें साफ तौर से नजर आ रहा था कि ये वीडियो किसी दवाब में बनवाया गया। जिसका इस्तेमाल अंतरराष्ट्रीय छवि सुधारने के लिए पाकिस्तान करना चाहता है। जिसे भारतीय मीडिया ने तुरंत अपनी स्क्रीन पर दिखाया लेकिन आवाज बंद करके। सभी मीडिया चैनल्स ने कहा, कि इस वीडियो में पाकिस्तान के द्वारा भारत की छवि को नुकसान पहुंचाने का काम किया जिससे हम दिखाना नहीं चाहते और अपने दर्शकों बताना चाहते हैं ये वीडियो शेयर ना करें। मीडिया का ये कदम काफी सराहनीय है लेकिन सवाल ये है कि जिस समझदारी का परिचय मीडिया ने अभिनंदन के केस में दिया वैसा ही वह आतंकियों के वीडियो के दौरान क्यों नहीं देती। तब क्यों आतंकवादियों के संदेश को बार-बार टीवी स्क्रीन पर दिखाकर उनके मैसेज का प्रचार करती है। तब मीडिया का राष्ट्रहित, उसके कर्तव्य उसकी प्रतिष्ठा कहां चली जाती है। मैं भी एक मीडियाकर्मी हूं, अपने ही पेशे को मिलने वाले बिकाऊ, गोदी मीडिया जैसे दागों को साफ कर पाना मुश्किल हो चला है। हम कितनी भी अच्छी पत्रकारिता या काम कर ले, लेकिन कुछ लोगों की वजह से वह पत्रकार भी बदनाम है जो आज भी अपनी पत्रकारिता के प्रति ईमानदार है।

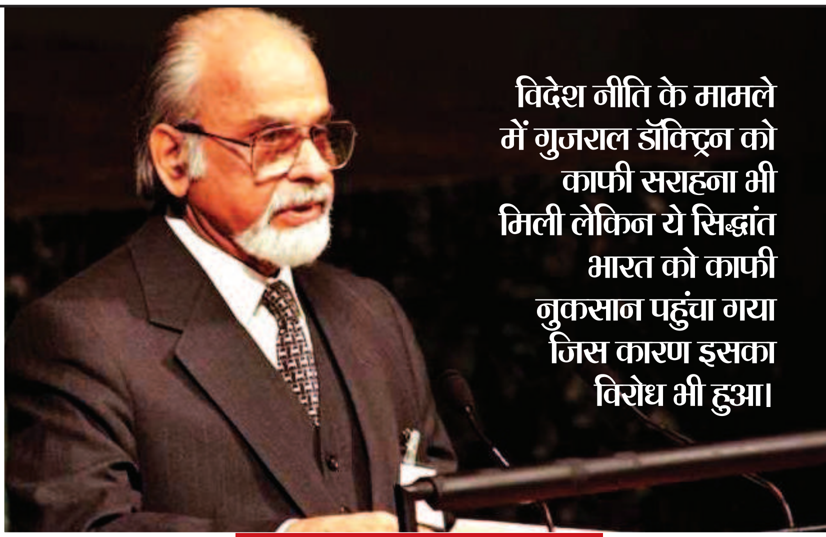

विदेश नीति के मामले में गुजराल डॉक्ट्रिन को काफी सराहना भी मिली लेकिन ये सिद्धांत भारत को काफी नुकसान पहुंचा गया जिस कारण इसका विरोध भी हुआ।

गुजराल डॉक्ट्रिन

जब कुछ गलत फैसलों ने पहुंचाया भारत को नुकसान

किसी नेता या मीडिया ने बड़े देशों से हमले करने, किसी आतंकी को मारने के सबूत मांगे। अगर नहीं, तो फिर भारत की हर आतंकी घटनाओं पर की जाने वाली कार्रवाई पर सबूत क्यों मांगे जाते हैं? क्या सत्ता ने राजनेताओं को इतना लालची बना दिया कि वह राष्ट्रहित मामलों में भी साथ नहीं आ सकते। जब अन्य देशों के उदाहरण चुनावी रैलियों में दिए जाते हैं तो फिर अन्य देशों के विपक्ष की तरह राष्ट्रहित मसलों पर हमारे नेता एक क्यों नहीं होते। मीडिया और नेता उस जंग की तैयारी कर रहे हैं जो कभी नहीं हुई।

बदलते वक्त के साथ भारत की राजनीति किस स्तर पर है। इस बात का अंदाजा हम एयर स्ट्राइक के बाद चालू हुई सबूत देने की जंग से लगा सकते हैं। कितना अजीब लगता है कि एक तरफ हमारे देश में विकास और प्रगति जैसी बात की जाती है वहीं उन्ही नेताओं के मुंह से सबूत मांगने की बात की जाती है। क्या कभी दाऊद इब्राहिम जैसे आतंकी के मारने के सबूत किसी ने मांगे। क्या अमेरिका ने दूसरे देशों पर हमले करने या फिर दाऊद के मारने के सबूत दिए। क्या किसी नेता या मीडिया ने बड़े देशों से हमले करने, किसी आतंकी को मारने के सबूत मांगे। अगर नहीं, तो फिर भारत की हर आतंकी घटनाओं पर की जाने वाली कार्रवाई पर सबूत क्यों मांगे जाते हैं। क्या सत्ता ने राजनेताओं को इतना लालची बना दिया कि वह राष्ट्रहित मामलों में भी साथ नहीं आ सकते। जब अन्य देशों के उदाहरण चुनावी रैलियों में दिए जाते हैं तो फिर अन्य देशों के विपक्ष की तरह राष्ट्रहित मसलों पर हमारे नेता एक क्यों नहीं होते। मीडिया और नेता उस जंग की तैयारी कर रहे हैं जो कभी नहीं हुई। हालात जंग की ओर तो नहीं गए लेकिन दोनों देशों में तनाव और भावनाओं का ज्वार उफान ले रहा है। कूटनीतिक जंग भी जारी है और सियासत भी। न तो सरकार ने और न ही सेना ने यह दावा किया कि बालाकोट एयर स्ट्राइक में कितने मारे गए। लेकिन भाजपा के नेताओं ने दावा कर 300-350 आतंकवादी मारे गए। वहीं जब विपक्ष को लगा कि अहम मुद्दों को अब जनता भूल बैठी है और उसका सारा ध्यान पाकिस्तान पर है तो ऐसा क्या किया जाए कि विपक्ष फिर से चर्चा में आए। इसी के साथ विपक्ष ने संसद में 1 मार्च को बैठक करके सैनिकों की शहादत और सैन्य कार्रवाई का राजनैतिक इस्तेमाल करने के लिए योजना बनाई। सबसे पहला बयान पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का आया जिन्होंने विदेशी मीडिया का हवाला देते हुए है कि जहां पीएम ने हवाई हमला करवाया है वहां किसी की मृत्यु नहीं हुई। पीएम हमें पूरी कार्रवाई का ब्यौरा दे। फिर कांग्रेस के दिग्विजय सिंह ने कहा, एयर स्ट्राइक में मारे गए आंतकियों के बीजेपी नेता अलग-अलग आंकड़े बता रहे हैं। देश जानना चाहता है कि इनमें झूठा कौन है। सबूत मांगने वाली कतार में विपक्ष ने शहीद के परिवारों और आम जनता तक को घसीट लिया। मुद्दा ये है कि देश के अंदर और बाहरी हिस्सों में होने वाली हिंसात्मक घटनाओं पर राजनीति को इतना तूल देकर माहौल और लोगों को क्यों भड़काया जाता है।

क्या देश भूल गया है कि ऐसी राजनीतिक घटनाओं के परिणाम होते हैं बड़े-हमले और राष्ट्रविरोधी गतिविधियां। बुरा लगेगा लेकिन जैश-ए-मोहम्मद भले ही आंतकी संगठन हो लेकिन उसका आतंक आज जो सर उठाकर बोल रहा है वो भारत की ही देन है। हम भारतीयों के साहस का जब-जब परिणाम मांगा गया है हम तब-तब फेल नजर आए हैं। जैसा कि आतंकी मसूद अजहर को छोड़ने का दवाब अटल सरकार पर नहीं बनाया होता। यदि हमने सड़कों पर उतरकर विरोध शुरू नहीं किया होता तो शायद आज जैश-ए-मोहम्मद इतना शक्तिशाली ना होता।

हम दोषी है आतंकवाद बढ़ाने के लिए

कभी-कभी कुछ बातें सोचने में इतनी आसान लगती है लेकिन उनकी हकीकत काफी कड़वी होती है और जहां तक नए भारत का अनुभव है उसमें जोश बहुत है लेकिन सिर्फ बातों में, हिम्मत के नाम पर फिसड्डी है। इसका परिणाम अभिनंदन वर्धमान का पाकिस्तान कब्जे में होने के वक्त सामने आया। जब सोशल मीडिया पर 'युद्ध नहीं चाहिए', 'अभिनंदन को वापस लाओ', जैसे हैशटैग ट्रेंड करने लगे। पूरी दुनिया मानती है युद्ध किसी समस्या का हल नहीं है लेकिन इसके परे सोचने की बात है कि हम कैसे 'लोकतंत्र' के नाम पर 'फ्रीडम' के नाम पर, सरकार पर मनचाहा दवाब बना सकते हैं। हम क्यों नहीं समझते हैं कि देश के आंतरिक मामले हमारे घरों के चाचा-ताऊ विवाद जैसे नहीं है। इस बात को ऐसे भी समझना जा सकता है कि घर के किसी वाद-विवाद में घर के बड़े मिलकर मुखिया से शिकायत करते हैं और जो उचित हो वो निर्णय लेने को कहते हैं, ऐसा नहीं सिर्फ अपना फैसला सुना दिया तो उसके अनुरूप फैसला लिया जाए। वैसी ही प्रक्रिया देशहित फैसलों में ली जाती है। आज आतंकवादियों के जो हौसले बढ़ें हैं उसके पीछे पाकिस्तान का जितना हाथ है उतना भारत का भी है।

भारत सरकार को हमेशा दवाब बनाकर फैसला करवाया गया ना कभी सेना से पूछा, कि वो तैयार है ना किसी और से। देश के मामलों में भावनाएं जितनी जरूरी है उतना जरूरी समूचे राष्ट्र और विश्व की सुरक्षा भी। क्योंकि एक गलत फैसला आपका सबकुछ छीन सकता है। जैसा कि हर आर्मी परिवार के साथ रोज हो रहा। हम कभी वो

कश्मीर आतंक से अर्थव्यवस्था चरमराई

क्या आपने सोचा कभी एक राज्य में तनाव के चलते वह केवल एक समस्या नहीं होती। उसमें कई पहलू होते हैं जो एक बार बिगड़ने लगते हैं तो फिर बिगड़ते चले जाते हैं। वैसा ही अर्थव्यवस्था है। जो अगर जल्दी स्थिर नहीं हुई तो फिर बिगड़ती चली जाती है। एक अनुमान के मुताबिक, आतंकवाद की वजह से कश्मीर और देश की अर्थव्यवस्था को 4.55 लाख करोड़ का नुकसान होता है। देश के बाकी राज्यों की तुलना में केन्द्र सरकार द्वारा कश्मीर को 8 गुना से ज्यादा फण्ड दिया जाता है। इसके बावजूद वहां के हालात सामान्य नहीं होते। इसलिए अब कश्मीर से धारा 370 को खत्म करने की मांग तेजी पकड़े हुए है।

सोच नहीं सकते हैं, क्योंकि हम आर्मी में जाना नहीं चाहते, हमें पता नहीं सैनिक की जिंदगी सीमा पर कैसी होती? उसके परिवार की मनोस्थिति का अंदाजा हमें होता नहीं, बस हम कल्पनाशक्ति के बाण छोड़ना जानते हैं।

गुजराल डॉक्ट्रिन ने बनाया खुफिया क्षमताओं को कमजोर

पुलवामा हमले के बाद से ही खुफिया एजेंसियों पर सवाल उठने लगे हैं। जानकारी ये भी है कि खुफिया एजेंसियों को अंदाजा था कि आतंकवादी संगठन किसी आतंकी घटना को अंजाम देने वाले हैं। उसके बाद भी इतनी बड़ी चूक होना। कई सवाल खड़े करती है। आतंकी संगठनों को रोकने के लिए सिर्फ सैन्य क्षमता से काम नहीं चलेगा। यदि हम भी चाहते हैं कि अमेरिका जैसी कार्रवाई भारत भी करें तो हमें अपनी खुफिया एजेंसियों को मजबूत करना होगा जो कि तुरंत ऐसी जानकारी दे जिन पर वक्त रखते एक्शन लिया जा सके। लेकिन आपको जानकर हैरानी होगी कि पाकिस्तान जैसे देश में भारत की कोई भी खुफिया एजेंसी काम नहीं कर रही है। जो हमें ये जानकारी दे सके की मसूद अजहर कहां है? पाकिस्तान में कौन-कौन उसे फंडिंग दे रहा है? क्या हथियार है उनके पास और भी बहुत कुछ। अब आपका सवाल होगा इसके पीछे की वजह क्या है। तो इसके पीछे की वजह है गुजराल डॉक्ट्रिन। ये भारत के पूर्व प्रधानमंत्री और पूर्व विदेश मंत्री इंद्र कुमार गुजराल द्वारा निर्मित एक सिद्धांत है। जिसे गुजराल डॉक्ट्रिन नाम दिया है। साल जून 1996 से अप्रैल 1997 तक देश के प्रधानमंत्री एच.डी. देवगौड़ा थे। उन्होंने इंद्र कुमार गुजराल को भारत का विदेश मंत्री नियुक्त किया गया और उन्हें एक जिम्मेदारी दी गई। जिसमें उन्हें दक्षिण एशिया की अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भारत को 'बिग ब्रदर्स' की तरह स्थापित करना था। इसके लिए उन्होंने सौम्य कूटनीति का सहारा लिया। उन्होंने सोचा अगर भारत बड़ा दिल दिखाएगा तो सभी पड़ौसी देश भारत की जय-जयकार करेंगे और इसके साथ भारत दक्षिण एशिया में खुद-ब-खुद एक बड़े भाई के तौर पर स्थापित हो जाएगा। लेकिन विदेशी मामलों के सलाहाकारों का मानना है कि यह उनकी सबसे बड़ी भूल थी। भारत आज भी गुजराल डॉक्ट्रिन का खामियाजा भुगत रहा है। गुजराल डॉक्ट्रिन के मुताबिक पहले पड़ौसी देशों में भारत पर विश्वास पैदा करने की कोशिश करनी होगी, उनके साथ विवादों को बातचीत से सुलझाना होगा और उन्हें दी गई किसी मदद के बदले में तुरंत कुछ हासिल करने की अपेक्षा नहीं करनी होगी। जिसके सिद्धांत कुछ यूं थे कि, दक्षिण एशिया का कोई भी देश किसी दूसरे देश के खिलाफ अपनी जमीन का इस्तेमाल नहीं होने देगा। दक्षिण एशिया का देश किसी दूसरे देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा और एक-दूसरे की अखंडता और संप्रभुता का ख्याल रखेंगे। भारत ने यही अपना बड़ा दिल दिखाते हुए पाकिस्तान जैसे देश से अपनी सारी खुफिया एजेंसियों को समाप्त कर दिया और भारत की मंशा थी कि पाकिस्तान भारत का पड़ोसी देश है अब हमें पाकिस्तान के अंदर जासूसी नहीं करवानी है। जो भी दोनों देशों के मसले हैं उन्हें बैठकर बातचीत के माध्यम से हल करना है। बस इसी गुजराल डॉक्ट्रिन के नियमों के कारण भारत की वर्षों की मेहनत बर्बाद हो गई और आज भारत को उसका खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। आपको बता दें, विदेश नीति के मामले में गुजराल डॉक्ट्रिन को काफी सराहना भी मिली लेकिन ये सिद्धांत भारत को काफी नुकसान पहुंचा गया जिस कारण इसका विरोध भी हुआ। आप इस बात का अंदाजा तो लगा सकते हैं कि एक अन्य देश में अपनी खुफिया एजेंसियां शुरू करना। अपने ऐसे गुप्त लोग तैयार करना जो हमें वहां चल रही देश विरोधी गतिविधियों से अवगत करवा सकें। उसके लिए ऐसी टीम बनाने के लिए कितना लंबा वक्त लगता है। अब यदि हम चाहते हैं कि पाकिस्तान हमारे खिलाफ क्या साजिश रच रहा है तो हम कैसे पता लगाएंगे। क्योंकि हमारे पास ऐसे कोई लोग और एजेंसी नहीं। इसलिए एक बार फिर से भारत को सुरक्षा मामलों के लिए खुद को पुनः तैयार करना होगा। जिसमें एक बड़ा वक्त लगेगा। बस ऐसी ही खामियों का नतीजा है कि आज देश के टुकड़े-टुकड़े गैंग हर बार सबूत मांगने आ जाते हैं।

आपको नई पहचान दिलाने के लिए पञ्चदूत आ रहा है आपके शहर में सामाजिक मञ्च / SOCIAL STAGE कार्यक्रम लेकर, जहां सामाजिक मुद्दों पर कविताएं/गीत/गजल आदि लिखने वाले युवाओं को मौका मिलेगा एक बड़े मंच पर प्रस्तुति देने का। कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अपनी प्रस्तुति का 30 सेकंड का ट्रेलर वीडियो magazine@panchdoot.com पर आधार कार्ड की कॉपी के साथ ई-मेल करें।

नोट : आपके शहर/गांव से उपयुक्त संख्या होने पर ही कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

अधिक जानकारी के लिए
www.panchdoot.com को विजिट करें।

हालात क्या करवट लेते हैं?

नई सरकार से उम्मीद की जा रही थी कि वह इस और ध्यान देगी लेकिन इमरान सरकार ने पुलवामा हमले और एयरस्ट्राइक पर जो बयानबाजी की उसे पाकिस्तान सरकार और वहां पल रहे आतंकवाद की तस्वीर साफ हो गई। 'पाकिस्तान वर्सेज नरेंद्र मोदी' इसलिए भी कहना सही है कि पिछले दिनों जो कुछ हुआ उसने पूरी दुनिया का ध्यान खींचा है।

अंकित कुमार सिंह

ऐसा लगता है एयरस्ट्राइक के बाद और विंग कमांडर अभिनंदन की घर वापसी के बाद भारत-पाकिस्तान के बीच युद्ध जैसी स्थिति थोड़ी शांत है। लेकिन क्या सच में ऐसा है? पूरे घटनाक्रम को समझने के बाद लगता है कि अब अगला दौर पाकिस्तान वर्सेज नरेंद्र मोदी होने वाला है। हम सब ने देखा है कि आतंकवाद पर पाकिस्तान का पिछला रवैया कैसा रहा है। नई सरकार से उम्मीद की जा रही थी कि वह इस और ध्यान देगी लेकिन इमरान सरकार ने पुलवामा हमले और एयरस्ट्राइक पर जो बयानबाजी की उसे पाकिस्तान सरकार और वहां पल रहे आतंकवाद की तस्वीर साफ हो गई। 'पाकिस्तान वर्सेज नरेंद्र मोदी' इसलिए भी कहना सही है कि पिछले दिनों जो कुछ हुआ उसने पूरी दुनिया का ध्यान खींचा है। वहीं बीजेपी पार्टी ने लोकसभा चुनावों के लिए नया नारा 'मोदी है तो मुमकिन है' भी तैयार कर लिया है। देश से लेकर विदेशी राजनैतिक और कूटनीतिक लोगों में भारत-पाकिस्तान पर अब आगे क्या की चर्चाओं से बाजार गरम है। नरम दिल भारत के कठोर फैसले के बाद दुनियाभर का रवैया बदला है। इतिहास खुद को दोहराता जरूर है। ये वही पाकिस्तान है जिसने 50 साल पहले 1969 में मोरक्को के रब्बात में भारतीय प्रतिनिधिमंडल को मुख्य रूप से ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इस्लामिक को-ऑपरेशन (ओआइसी) की ओर से अनसुना कर दिया गया था। अब हाल में ओआइसी से मिले झटके ने पाकिस्तान की विश्वसनीयता को बेहद चोट पहुंचाई है। पाकिस्तान ने ओआइसी में भारतीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज को बतौर अतिथि निमंत्रण का विरोध किया, जिसकी अनदेखी की गई और पहली बार मुस्लिम देशों ने आतंक को बढ़ावा देने के लिए एक मुस्लिम देश की आलोचना की। इसके बावजूद आतंकवाद के खिलाफ प्रभावी कदम उठाने के बजाय पाकिस्तान बौखलाहट में कोई हिंसक कदम उठा सकता है जिसका असर सीमा पर लगातार देखने को मिल रहा है। वहीं 7 मार्च को जम्मू कश्मीर के बस स्टैंड पर हुए ग्रेनेड हमला है।

एक आतंकवाद पर राग अलग-अलग क्यों?

हमें आतंकवाद की परिभाषा को भी अपने नजरिए से देखने की जरुरत है, लाशों के ढेर तब भी लगे थे जब अमेरिका ने एक झूठ का सहारा लेकर इराक को बर्बाद कर दिया था, उसने उस होटल को भी उड़ा दिया था जिसमे दुनिया भर के पत्रकार ठहरे थे वह भी आतंकवाद ही था, लेकिन उस आतंकवाद के खिलाफ दुनिया चुप थी और हम भी। इसलिए उन चीजों पर भी नजर रखिए जिन्हें हमारी नजरों से बचाया जाता है।

कहीं भी कोईं बम विस्फोट होता है तो आतंकवाद पर बहस छिड़ जाती है ये बहस गली मोहल्लों शहर की पान की दुकानों, चाय की दुकानों, रेल में, बस में सफर करने वाले डेली पेसेंजरों से शुरु होकर बड़े-बड़े मीडिया हाऊस के पैनल डिसक्सन तक पहुंच जाती है। लेकिन आतंकवाद क्या है उसकी परिभाषा क्या है? उसका जनक कौन है? ये कहीं सुनने को नहीं मिलता। जब आतंकवाद एक है तो उसपर राग क्यों अलग-अलग अलापना है। अगर 9/11 को ही आतंकवाद माना जाता है है तो नागासाकी और हिरोशिमा की जमीन को बंजर बनाने वाला परमाणु हमला क्या था? सम्राट अशोक द्वारा किया गया कलिंग का संहार क्या था? अंग्रेजों द्वारा किया गया जलियांवाला बाग क्या था? अमेरिका में जो हमला होता है तो वह आतंकी करते हैं मगर जब अमेरिका द्वारा इराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान में ड्रोन हमले किये जाते हैं वह क्या है? क्या वह आतंकवाद नहीं है? फिलिस्तीनियों का इजराइल द्वारा किया

गया नरसंहार क्या है? 1983 में असम के नेली में किया गया 5000 बांग्लादेशियों का संहार क्या था? 1984 में दिल्ली में सिक्खों का नरसंहार क्या था? क्या वह आतंकवाद नहीं था? 1987 में मेरठ के मलियाना हाशिमपुरा में पीएसी के द्वारा किया गया अल्पसंख्यकों का कत्ल ऐ आम क्या था? 1993 में मुंबई में शिवसेना के कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया 1100 अल्पसंख्यकों का कत्ल क्या था? क्या वह आतंकवाद नहीं था? उसके बाद 2002 में भारत के कथित विकसित राज्य में जो हुआ क्या वह आतंकवाद नहीं था? अगर निर्दोषों को ही मारना ही आतंकवाद है तो क्या उपरोक्त घटनाओं में मरने वाले निर्दोष नहीं थे? अगर दिल्ली, मुंबई, समझौता एक्सप्रेस, अजमेर, हैदराबाद, आदी स्थानों पर बम विस्फोट करना ही आतंकवाद है तो फिर उपरोक्त घटनाओं को आप क्या नाम देंगे? क्या ये आतंकवाद नहीं है? क्या इन घटनाओं में मरने वाले निर्दोष नहीं थे? बगदाद की सड़कों पर बहते हुए खून को, सीरिया में कैमिकल हमले में कतार लगाकर मारे गये लोगों के खून को किस घटना से जोड़ेंगे क्या वह आतंकवाद नहीं है? अफसोस ये सब आतंकवाद है मगर हम और हमारे बुद्धिजीवी आतंकवाद की उसी परिभाषा को मानते हैं जिसे पश्चिमी देश मानता है।

मेरा मानना है, आतंकवाद के खात्मा के लिए सर्जिकल स्ट्राइक से जरूरी है, गांधी विचारधारा से इसके जड़ तक पहुंचकर ही परिवर्तन करना और इसके साथ-साथ भटके हुए लोगों को मार्ग पर लाने का प्रयत्न करना तथा विश्व शांति की बातों को धरातल पर लाने के लिए अगर कठोर कदम भी उठाना पड़े तो इससे पीछे नहीं हटा जा सकता हैं और आज इसके उपज के लिए जिम्मेदार देशों को भी यह समझना होगा कि ये दो धारी तलवार हैं इसका परिणाम मानवता के लिए विनाशकारी हैं अत: इसे पूरी तरह से उखाड़ फेंकने के लिए सबकों सारे मतभेदों को भुला कर साथ आने की आवश्यकता हैं तभी इसका सार्थक परिणाम आ सकेगा और हो रही आतंकवादी घटनाओं और बढ़ रहे आतंकवाद पर अंकुश लगाया जा सकता हैं लेकिन ऐसा हो पाना काफी मुश्किल है।

इसके अलावा, पाकिस्तान को बेअसर करने के लिए युद्ध के दौरान मनोवैज्ञानिक जंग की रणनीति को भी अपनाना चाहिए। साथ ही मीडिया, नेताओं आदि को संयम बरतना चाहिए। संतुलित भाषा का प्रयोग करते हुए अपने नैतिक मूल्यों का पालन करना चाहिए, नहीं तो विरोधी खेमा इसका लाभ उठा सकता है। जिससे हालात क्या करवट लेते हैं कुछ कहा नहीं जा सकता।

शर्मा ट्रैवल्स
फोन 01552-268778, 268167, 94136-13178
बस स्टैंड के सामने, हनुमानगढ़ जंक्शन

डेली सर्विस : आगरा, सरदारशहर, रतनगढ़, सुजानगढ़, लाडनू
डीडवाना, कुचामन, पर्वतसर, रूपनगढ़, किशनगढ़
फोन 01552-225589, 225289, 94145-10859
बस स्टैंड के सामने, हनुमानगढ़ टाउन

वो क्या रखेंगे भारत को
स्वच्छ जो
स्वतः का शरीर स्वच्छ
नहीं रख पाते
rj_nandy

सड़कों पर थूकते हो
फिर क्यों ये पूछते हो
हमारा देश साफ नहीं
विदेशों की तुलना में
priyanshu_ranjan

कोई और करें तो उसकी गलती पर
तो तुरंत जाता है ध्यान
पर क्यों खुद की हरकत को हम
अनदेखा कर जाते है?
किसी एक की जिम्मेदारी ही नहीं है,
'स्वच्छ भारत अभियान'
तो क्यों न पहले अपनी सोच बदल,
स्वयं से शुरू करते है?
MRJ

युवा लेखन को प्रोत्साहन देने के लिए पञ्चदूत द्वारा अलग-अलग प्रयास किए जाते रहे हैं। इस बार सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों पर #swachhbharat_ panchdoot के साथ एक तस्वीर साझा की गई। जिसे युवाओं ने अपने शब्दों द्वारा सजाया है जिसके अंश यहां मौजूद है...

बाहरी स्वच्छता तब ही संभव है
जब मानसिकता स्वच्छ हो
मानसिकता तब स्वच्छ होगी
जब मन विकारों से मुक्त हो। loveneetm

v v v

ये न सुधरेंगे तू चाहे हजार कोशिश करले
सफाई की डिंगे देकर ये रोड़ पर ही थूकेंगे
किन-किन को समझाए हम
सफाई का जरिया अपनाना
ये देश इनका भी है, ये कब समझेंगे
इसको स्वच्छता से सवांरना। soulful_speech

v v v

अगर करोगे ऐसी हरकत
तो कैसे होगा स्वच्छ भारत
सफाई का करो स्वागत
और गंदगी से करो नफरत।
ashish_says

v v v

स्वच्छ भारत का सपना
हर दिल में जगाना होगा
इसे देखकर
हमें प्रयास गहराना होगा। Preetiii

v v v

कल ये ना कहना कि बड़ी गंदगी है यहां,
शायद पहला कचरा तुम्हीं ने डाला हो
नाम होगा तुम्हारे शहर अगर कल सफाई में
तब करोगे गर्व कि तुम इस शहर में रहते हो।
brokenwords_satender 07022019

स्वच्छ भारत का लगाते हैं सब नारा
मगर स्वछता का रखता ना कोई ख्याल
कूड़ा कचरा फेंक रस्ते पर
थूकते जहां-वहां
देते हैं सरकार को गाली
की स्वच्छता नहीं है कही
मगर भूल जाते हैं ये वो
की वे स्वयं है स्वच्छता की पहली कड़ी।
vinitjain

v v v

हम अपने व्यक्तित्व का कैसा स्वरूप देते है
कूड़ा इधर-उधर फेंककर
अपने आचरण का सबूत देते है
स्वच्छता मिश को वो लोग कोसों दूर कर रहे है
जो यहां-वहां गुटका-पान खाके थूक देते है।
विपिन 'बहार'

v v v

बड़े-बड़े बयान देने से कुछ नहीं होता 'साहब'
अगर हमें स्वच्छ भारत चाहिए तो
शुरूआत हमें खुद से ही करनी होगी।
shayraanshy_

v v v

जरूरी नहीं सरहद पर ही देश सेवा करो
ये भी देश सेवा है अगर तुम देश मैला न करो।
shrutiwari299

v v v

पहले देश के गद्दारों को साफ करो
देश अपने आप स्वच्छ हो जाएगा। निखिल शर्मा

इधर-उधर थूकों नहीं, बलगम पीक फकीर
दो सच्चा पैगाम ये, मत घर रोग शरीर
कूड़ा करकट का कहीं, सरे आम न मुकाम
स्वच्छ देश अभियान का, दो सच्चा पैगाम।
singh_ankit_hunny

v v v

मुंह में गुटखा..लाल जुबान
करने चले हैं स्वच्छ भारत निर्माण
खाया पान मारी पिचकारी, शरमा गई सड़क बेचारी
गंदगी खुद फैलाते हैं और दोषी सरकार को ठहराते
सड़क को बना लिया है पीकदान
ऐसे पूरा करेंगे स्वच्छ भारत अभियान?
Anju_Tripathi 'तेजू'

v v v

लोगों से शिकायत क्या करना
खुद को बदलना होगा यारो
गर बचाना है, पांव को गंदगी से
तो खुद से जूता पहनना होगा
सारे शहर में कालीन बिछाने से क्या होगा।
sunilmaheshwari

v v v

कितने भी भगीरथ प्रयत्न हो, कुछ नहीं सुधरेगा
ध्यान रखिए, जब बदलेंगे हम तभी देश बदलेगा।
deepajoshidhawan

v v v

मेरी पान गुटका की पिचकारी
तुम्हें गंदगी लगती है
वो सफेद कुर्ते वाले जुबां से
गंदगी फैला रहे हैं उनका क्या? milan.rajput2710

v v v

थूकों अपनी हरकतों पर
क्यों अपने घर में थूकते हो
थोड़ी-सी भी गर शर्म है तुममें
ना गंदगी फैलाना आस-पास
इतना एहसान करना देश पर। rangkarmi_anuj

अरे क्या कर रहे हो
मुंह में गुटका सेट कर के
देश में लोग कितनी गंदगी फैलाते हैं
उसके बारे में चार लाइन लिख रहे हैं। musafir7

v v v

कैसे हो उस देश का विकास
जब जनता ही हो स्वच्छता के खिलाफ।
meenuagg

v v v

खाकर गुटका इधर-उधर थूकता ये इंसान
जानबूझकर कर रहा अपने संस्कारों का बखान
पढ़ा-लिखा है या नहीं ये तो ये ही जाने
लेकिन आज दे रहा है अपने निरक्षर होने का प्रमाण।
atulmehpa

v v v

गुटखा चबाने में मशहूर था
बदबू मुंह से निकल रही थी
लार कपड़ों पर टपक रही थी
बेशर्मी चेहरे पर झलक रही थी
स्वच्छ भारत इंसान है
स्वच्छता चुप खड़ी ताक रही थी
बेशर्मी की हद होती है
बात-बात पर मुंह से पीक निकल रही थी। DS

v v v

चलती गाड़ी से कचरा फैलाने वालों
कल को कोई आपके ऊपर या घर पर कचरा डाले
तो हंस कर स्वीकार करना क्योंकि
आप से ही सीखकर आप पर ही आजमाना है।
bahetiankita

v v v

फटती क्यों नहीं मानव-छाती
धरती की करूणा हा-हा खाती
ओ मानवता के धूर्त पुजारी
आसुरी वृति भी देख लजाती। ऋतुपर्ण

v v v

थूक-थूक कर सड़क, दीवार, खिड़की को गंदा किया
घर, दुकान, ऑफिस के आस-पास भी कचरा फैला दिया
अब तो शर्म करो और ना फैलाओ कहीं भी गंदगी
क्योंकि प्रधानमंत्री ने भी अपने हाथ में झाड़ू थाम लिया।
ankahe_alfaaz

v v v

अपनी ही धुन में बेखबर है ये लोग
शहर में गंदगी की अहम वजह है ये लोग
पान तम्बाकू खाकर जहां मन करे थूक दिया
सफाई अभियान की उड़ा रहे हैं ये धज्जियां।
mini_s

v v v

जुबां केसरी
वजह बनी ये कैंसरी
चाहे हो दांतों के धब्बे
या फिर रंग रहे हो रस्तों को केसरी
बचा लो खुद को
चाहे तुम्हें फिकर ना हो देश की। gopalijha95

भैया जी की कला देख,
हतप्रभ है दुनिया सारी
रंग दें सूने किले सड़क,
ये मारें जब पिचकारी
है कोई इनके जैसा उत्तर दो
स्वर्णपदक लाकर देगें,
इन्हें ओलंपिक में अवसर दो
कह चिंतित कविराय,
सब उन्नति है फीकी-फीकी
अब जतन करें कैसा जिससे,
बदले आदत भैया जी की

आशीष हरीराम नेमा

कौन कहता है देश गंदा है?
ध्यान से देखों हमारा दिमाग ही गंदा है
कौन कहता है देश को साफ करना है
सबसे पहले हमें अपने में सुधार लाना है
nitish Kumar

झाडू लेकर हाथ में, सेवक करे गुहार
मत फैलाओं गंदगी रखों साफ संवार
दोष प्रणाली पर लगे, क्यों कूड़े का भार
देशभक्ति ऐसे करो, खुद में करो सुधार
संभव होतो थूक दो, ये गंदगी पहचान
स्वच्छ रखो भारत सदा, रखो देश का मान।
anita_sudhir

v v v

थूकना ही है तो
अपना अहम थूकों
यू गंदा करके जगह-जगह
मेरे देश का सम्मान ना फूकों। 2inkle_akshu07

v v v

स्वच्छता के लिए सबको जागरूक करना होगा
कुछ नासमझो को समझना होगा
फिर भी गर न समझे तो
जुर्माना इन पे लगाना होगा
स्वच्छ भारत बनाना होगा। Sushma_bhagat

v v v

एक मोदी स्वच्छ भारत का अभियान चलाता है
हम जैसे ही हजार मोदी फिर गंदगी फैलाता है
हमें बदलता हिंदुस्तान चाहिए साहेब, हम नहीं
हम भूल जाते हैं, देश को महान देशवासी बनाता है।
शुभम कश्यप

v v v

बड़ी विडंबना है ये
हम घर तो साफ रखना चाहते हैं
मगर देश नहीं।
ms_moonstone

ये सरे आम गंदगी थूकेंगे
सड़क किनारे शौच करेंगे
फिर देश को कहेंगे गंदा है
ये देश इन्ही की वजह से शर्मिंदा है
इन सबका बस एक उपाय करो
जहां भी दिखे ये गंदगी फैलाते
झाडू इन्हें दे के उसी वक्त
इनसे कहो सफाई करो
The Suraj Singh

v v v

थूकता क्यों है मूर्ख अज्ञानी
समझ बूझ से काम ले ओ सज्ञानी
होती गंदगी बढ़ती बीमारी
कभी न कर तू यह नादानी vasudhagoyal

जहां कहीं भी नजर डालिए, कचरे के हैं लगे अम्बार
चलती गाड़ी से मारें गुटखे की पिचकारी की धार
कितने ही अभियान चलाओ, ये न सुधरने वाले हैं
स्वच्छ भारत के स्वप्न का जाहिल कचरा करने वाले हैं
कूड़े का जहर फैलाकर खुद बीमारी न्योतेंगे
फिर निर्लज्जता से सरकार को पानी पी-पी कोसेंगे।
neetu_rajeev_kapoor

v v v

ये युवा हमारे देश के
इनके लिए आजादी का यही मतलब
अधिकारों की सीमा नहीं और
कर्तव्य इनका ना कोई एक है।
ayush_singh_15

v v v

स्वच्छ भारत रह गया किताबों में
लोग बाज न आए देखों सड़कों पे
anitasinghanitya

v v v

देश को गंदा करने में किसी एक का ना हाथ है
इसके लिए हमसब बराबर जिम्मेदार है
चलो हम सब मिलके एक प्रण उठाते हैं
सभ्यता और स्वच्छता को प्राथमिकता दे अपने समाज में सुधार लाते हैं
चलो एक स्वच्छ भारत बनाते हैं।
puja_shaw

v v v

गाड़ी तेरी महंगी है इसको रखके साफ
मातृभूमि के सीनेपर, थूक रहा है पापा।
scripting_

देश में आतंकवाद

गली में वो आवाजें अब सुनायी नहीं पड़ती
लोगों की भीड़ अब दिखायी नहीं पड़ती

देशभक्ति कम हो गयी है क्या लोगों की
ये हालत मेरे देश की किसी को बतलायी नहीं पड़ती

जोश रहता है क्या बस यूं ही चंद दिन
ज्वाला जलती है क्या बस यूं ही चंद दिन

मौका देखकर बदलते है सब यहां
ये बात अब किसी को दिखायी नहीं पड़ती

बड़े-बड़े नेताओं का सियासी खेल
दांव पर लगा हर बार की तरह मेरा ही देश

होगा क्या, कब होगा, होगा भी या नहीं
ये बात अब कहीं सुनायी नहीं पड़ती

रोज नए पर्दे उठते हैं अब यहां,
पुराने चेहरों में नए लोग दिखते है यहां
ये बात क्या अब किसी को दिखलायी नहीं पड़ती

क्या रगों में बहता खून अब सूख गया है
क्या वही आंखें अब नम नहीं होती है

खून में बवाल अब नहीं होता है क्या
आंखों के झरने अब बहते नहीं है क्या

जिस्म वहीं है तो जान भी तो वहीं है
ये छोटी सी बात क्या दिखलायी नहीं पड़ती

अपना-अपना लगे है यहां सब बचाने
मां भारती की पीड़ा क्या सुनायी नहीं पड़ती

गली में वो आवाजें अब सुनायी नहीं पड़ती
लोगों की भीड़ अब दिखायी नहीं पड़ती।

पूनम तनेजा

कविता

एक सिपाही की आवाज

हो चुका विजयघोष अब
हम दुश्मनों को धूल चटाएंगे
कैसा भी हो दुश्मन
हम उसको मार गिराएंगे
देश की आन बान शान मे
हम प्राण अपने बिछाएंगे
भारत मां की रक्षा में
हम सार्थक कदम उठाएंगे
दुश्मनों को उनकी असली जगह
अब हम दिखाएंगे
भारत मां की रक्षा में
हम प्राण अपने बिछाएंगे
अगर लगी एक गोली हमें
तो दो को मार गिराएंगे
दुश्मनों के आगे
बारूद बन खड़े हो जाएंगे
भारत मां को आतंकवाद के
चंगुल से मुक्त कराएंगे
कैसा भी हो दुश्मन
हम उसको मार गिराएंगे
देश की आन बान शान में
हम प्राण अपने बिछाएंगे।

प्रीति

कैसे माफ करेगा तुझे खुदा

सुन.....जिन्हें तू मार रहा है,
कोई मक्खी मच्छर नहीं इंसान है
अरे दरिंदगी करने वाले
आवारा जानवर तू हैवान है

डेंगू जैसी बीमारी से भी खतरनाक बीमारी
आज आबाद है
क्या इलाज उसका,
जिस बीमारी का नाम 'आतंकवाद' है

बात बात पर तू इंशाल्लाह दोहराता है
खुदा के नाम पर बेकसूरों को मार डालता है

इस्लाम धोखे देने की भी इजाजत नहीं देता
और तू धोखे से वार कर जाता है

किस मिट्टी का बना है तू
जो तुझे रहम नहीं आता
जो इंसान दरिंदगी पर आ जाए
वो किसी धर्म में नहीं आता

खतरनाक है तेरी सोच
कौन तेरा मालिक कौन तेरा कोच

कौन देता है तुझे ऐसी सीख
इस काम के लिए कौन देता है तुझे भीख

ना तेरा बाप कोई, ना तेरी मां
ना ये जमीं तेरी, ना तेरा खुला आसमां

तेरी सोच, तेरी हरकतें,
तेरी करतूत है सबसे जुदा
कैसे मिल जाएगी जन्नत तुझे,
कैसे माफ करेगा खुदा

कैसे माफ करेगा तुझे खुदा ......
कैसे माफ करेगा तुझे खुदा।

शमीम खान

आतंकवाद - एक नासूर

'आतंक' एक नासूर, ना भरने वाला घाव
कर दे विनाश मानवता का
छोड़ दे पीछे कड़वी अमिट छाप
'आतंक' एक नासूर, ना भरने वाला घाव
किया संघर्ष कितना हमारे वीरों ने
गुलाम भारत को आजाद करवाने में
भगाकर विदेशियों को भारत में लाए बदलाव
'आतंक' एक नासूर, ना भरने वाला घाव
बंटवारे का ना निर्णय सही लिया
'कश्मीर' पर प्रश्न-चिन्ह लगा दिया
और कर दी आतंक की शुरुआत
'आतंक' एक नासूर, ना भरने वाला घाव
सैनिक हमारे जान पर खेल जाते
दुश्मन से तो चुटकी में जीत जाते
क्या किया जाए अपने लगा ले जमीर का मोल-भाव
'आतंक' एक नासूर, ना भरने वाला घाव
बहुदलीय प्रणाली का दबदबा है
बहुत बड़ा राजनीतिक मसला है
रहे बस दो ही विपक्षी दल, जरूरी ये बदलाव
'आतंक' एक नासूर, ना भरने वाला घाव
ना सृष्टि का तू रचयिता है
ना मानवता की परिभाषा है
जो समझ बैठा खुद को 'ईष्ट'
है क्या तेरे पास भी इसका सही जवाब?
'आतंक' एक नासूर, ना भरने वाला घाव।

विनीता पुन्धिर

लो ले लिया बदला

बदला, उस प्रेम के दिन खून की होली खेलने का
बदला, एक-एक बहने वाली रक्त की बूंद का
बदला, हर मां के अनगिनत आंसूओं का
बदला, उस बहन की राखी को चिथड़े में भेजने का
बदला, हर सुहागन से उसका सिन्दूर छीनने का
बदला, बूढ़े बाप की सहारा बनी लाठी तोड़ देने का
बदला, हमारी इंसानियत को कमजोरी समझने का
बदला, मेरी मातृभूमि को बंजर कर देने का
बदला, मेरे निहत्थे सिपाहियों के उस दर्द का
लो ले लिया बदला

रुक जाओ जरा, कुछ रंजिशें अभी बाकी है
कुछ तेरे कुछ मेरे, पर इम्तिहान अभी बाकी है
तेरी जमीन पर आकर,
तुझे गाड़ने का सपना मेरा बाकी है
1-1 का जवाब 100-100 से लेने की
वो जिद हमारी बाकी है
56 इंच के सीने का प्रतिघात बताना बाकी है
सोते शेर को छेड़ने का अंजाम देखना बाकी है
पानी तो वापस ले लिया, मुंह से निवाला छीनना बाकी है
ये तो हवा का हल्का शोर था,
मौत का खेल खेलना बाकी है
उस मां के जलते अंगारो का प्रतिशोध दिखाना बाकी है
रुक जाओ जरा, कुछ रंजिशें अभी बाकी है
कुछ तेरे कुछ मेरे पर इम्तिहान अभी बाकी है।

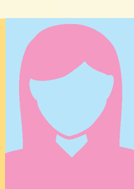

नेहा जोशी

दोहावली

घात लगाकर कर गए, आतंकी आघात।
हिम्मत थी तो सामने, आकर करते बात।

ओढ़ तिरंगा आ रहे, भारत मां के लाल।
देख-देख इस दृश्य को, हुए सभी बेहाल।।

आयी विपदा की घड़ी, अब कुछ कहा न जाय।
आंखें नम हैं देश की, विलाप सहा न जाय।।

ऋणी तुम्हारे हम हुए, तुम पर है अभिमान।
व्यर्थ न होगा साथियों, ये अनमिट बलिदान।।

कोटि-कोटि नमन उनको, जिनके तुम हो लाल।
बुझा न पायें आंधियां, जलती हुई मशाल।।

अजब जगत की रीति है, मरम न जाने कोय।
चिता पिया की जल रही, जन्म सुता का होय।।

माना विपदा है बड़ी, सही न जाये पीर।
नीति चाणक्य की रही, धरे रहो तुम धीर।।

सोच समझ निर्णय करो, तेज करो अब धार।
चारों दिश से घेर के, तब दुश्मन पर वार।।

अनिता सुधीर श्रीवास्तव

देश के लाल

सिर उठाकर देखो यारों
वतन के लाल चले
कंधे से कंधा मिलाकर
करते ये कदम ताल चले
वतन से इन्हें प्यार है बड़ा
वतन पर करते सब अपना निसार चले
मुस्कारते हुए ये देखो कैसे
शत्रु का सीना फाड़ चले
सिर उठाकर देखो यारों
वतन के लाल चले
उम्र जो भी हो इनकी
जज़्बा इनका कमाल है
बेखौफ़ रहते हैं ये वतन के आशिक
ये खुद में एक जलती मशाल है
एक नई लड़ाई जोश की लड़ने आज
आजाद हिंद के लाल चले।

मानसी

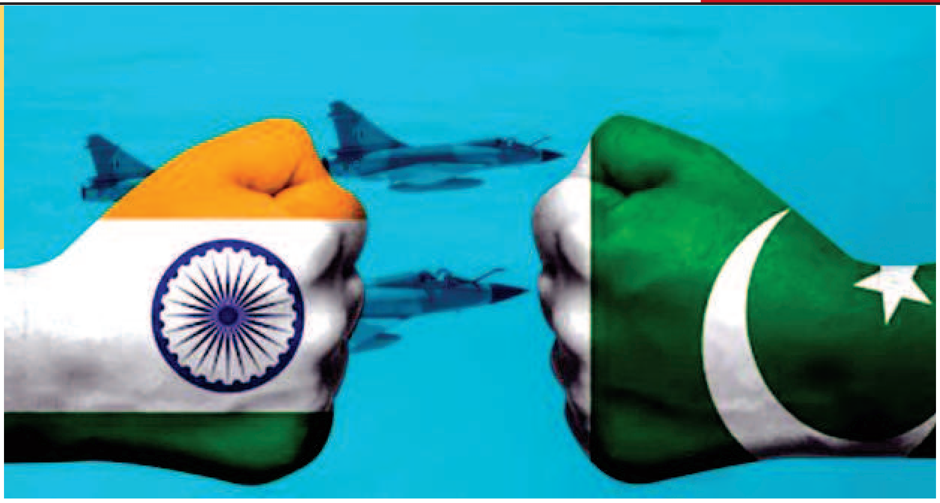

एयरस्ट्राइक के बाद किसके हौसले कितने बुलंद

सचिन धर दूबे

14 फरवरी को जब पूरा विश्व प्रेम के त्यौहार में डूबा हुआ था उसी वक्त शाम को जम्मू के पुलवामा में सीआरपीएफ काफिले पर आतंकी हमला हुआ। हमला इतना भयावह कि जवानों के शवों को पहचान पाना भी काफी मुश्किल था। काफिले की जिस गाड़ी को आत्मघाती हमलावर ने निशाना बनाया उस गाड़ी के परखच्चे तक उड़ गए। हमले के तुरंत बाद इस आतंकी हमले की जिम्मेदारी जैश-ए-मोहम्मद ने ली। यह वही जैश-ए- मोहम्मद है जिसका सरगना अजहर मसूद माना जाता है। वही अजहर मसूद है जो भारत के लोकतंत्र के मंदिर संसद पर हुए हमले का मुख्य साजिशकर्ता है। यह वही अजहर मसूद है जो एक वक्त भारत के गिरफ्त में था लेकिन कंधार विमान अपहरणकांड के वक्त आतंकी इसे छुड़ाकर ले गए। उसके बाद से ये लगातार भारत को अनगिनत चोटें दे चुका है, जो अब पक कर भारत के लिए नासूर बन चुकी हैं। इस घटना के बाद से पूरा भारत गुस्से में है। इसी के तहत भारतीय वायु सेना ने पुलवामा अटैक के ठीक 13 वें दिन आधी रात को पाकिस्तान के बालाकोट में स्थित जैश के ठिकानों पर बमबारी कर आतंकी सगठनों को काफी नुकसान पहुंचाया। इसी मिशन के साथ भारत ने पुलवामा का बदला लिया। आम जनता से लेकर विपक्षी पार्टियों ने एयरफोर्स के इस शौर्य पराक्रम की खूब तारीफ की। लेकिन असल खेल तो बाद में हुआ जब पाकिस्तान ने ये बोल दिया कि भारत ने खाली जंगलों पर बमबारी की है। पाकिस्तान का भारत की ओर से किए गए एयर स्ट्राइक में नुकसान होने से इनकार करते ही राजनीति शुरू हो गई। तीन राज्यों के लोकसभा चुनाव हार चुकी और मंहगाई, रोजगार, सांप्रदायिक, कृषि, राफेल जैसे मुद्दे पर घिरी बीजेपी एयर स्ट्राइक को किसी भी कीमत पर भुनाना चाहती है। वहीं एयर स्ट्राइक से पहले बीजेपी पर हर मुद्दे पर हमलावर रही कांग्रेस इस पर एक्स्ट्रा माइलेज नहीं लेने देना चाहती है। इसी माइलेज लेने और देने के बीच एक नई राजनीति पनपी है। एयर स्ट्राइक से पहले जन्म ले रहे सियासी समीकरण भी लगभग अब बदल चुके हैं। किसको कितना नफा नुकसान हुआ इसके विश्लेषण राजनीतिक पार्टियों के अंदर से और राजनीतिक विश्लेषकों की तरफ से आने शुरू हो चुके हैं।

एयर स्ट्राइक से पहले चुनावी 2019 के चुनावी मुद्दे

14 फरवरी से पहले कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल राफेल के मुद्दे पर लगातार भाजपा पर आक्रमण थे। तीन राज्यों में चुनाव हारने के बाद बीजेपी में भी सुस्ती छाई हुई थी। रोजगार, मंहगाई, देश में संप्रादायिकता को बढ़ावा देना, जीएसटी, आरक्षण और कृषि जैसे मुद्दे पर बीजेपी लगातार घिरती हुई भी दिखाई दे रही थी। स्थितियों को देखकर लग भी रहा था कि शायद इन्ही मुद्दों पर 2019 लोकसभा चुनाव लड़ा जाएगा। बंगाल में ममता बनर्जी सीबीआई के मुद्दे पर सरकार से सीधे तौर पर पंगा ले रही थी वहीं राहुल गांधी अपनी हर जनसभा में राफेल को लेकर नरेंद्र मोदी के नाक में दम किए हुए थे। उत्तर प्रदेश में हुए सपा-बसपा गठबंधन से भी पार पाने को लेकर बीजेपी किसी मारक प्लान की खोज में थी। सरकार का अंतरिम बजट भी किसानों और मध्यम वर्ग को लुभाने में लगभग फ्लॉप ही रहा। लेकिन भारत-पाकिस्तान मुद्दा भारतीय राजनीति में हमेशा से सबसे सर्वोच्च रहा है। दरअसल भारत की जनता बेहद भावुक रही है। वो अन्य सभी मुद्दों को बड़ी आसानी से भूल जाती है लेकिन देशभक्ति से जुड़ा मुद्दा हमेशा उसके जेहन से जुड़ा रहता है। पुलवामा हमले के बाद से ही भारत के हर नागरिक की देशभक्ति बाहर निकल कर आ रही। सबको किसी भी कीमत पर दुश्मन से बदला चाहिए था। बस इस ज्वार को भुनाने की

एयर स्ट्राइक के बाद बीजेपी की रणनीति

पुलवामा हमले से पहले चारों तरफ से घिरी बीजेपी के लिए एयर स्ट्राइक एक संजीवनी साबित हुई। बीजेपी को भी एक ऐसा मुद्दा चाहिए था जो अन्य मुद्दों की काट हो। ताकि चुनाव में वो आसानी से जीत कर निकल जाए और उसकी साख बची रहे। तीन चुनावों में हारने के बाद बीजेपी ने अंतरिम बजट में चीजों को नियंत्रित करने की कोशिश की लेकिन जनता में उसका कोई खास असर नहीं पड़ा। बीजेपी को भी पता है कि अगर चुनाव जीतना है तो उसे एयर स्ट्राइक के मुद्दे को लगातार जीवित रखना पड़ेगा। इसलिए प्रधानमंत्री मोदी और अमित शाह अपने हर चुनावी भाषण में एयर स्ट्राइक को जिस तरह से रख रहे हैं उससे लग भी रहा है 2019 चुनाव इसी पर होगा।

देरी थी। वायुसेना के स्ट्राइक के बाद जिस तरीके बीजेपी के नेता रैलियों में स्ट्राइक को लेकर बोल रहे हैं। उससे भी यही लग रहा है कि 2019 लोकसभा चुनाव का मुद्दा बेरोजगारी, मंहगाई से शिफ्ट होकर एयर स्ट्राइक पर आ गया है।

एयर स्ट्राइक के बाद कांग्रेस और अन्य विपक्षी पार्टियों की रणनीति

एयर स्ट्राइक ने कांग्रेस और अन्य विपक्षी पार्टियों की रणनीतियों को पूरी तरह फेल कर दिया है। 2016 में उरी हमले के बाद जब भारत सरकार ने पाकिस्तान के आतंकी ठिकाने पर सर्जिकल स्ट्राइक की थी तो कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों ने सरकार से तुरंत स्ट्राइक के सबूत मांगने शुरू कर दिए। जिसका फायदा बीजेपी ने विपक्षी पार्टियों पर सेना के साख पर सवाल उठाने का आरोप लगाकर उठाया। 2017 के विधानसभा चुनावों में बीजेपी ने इस मुद्दे का भरपूर तरीके से भुनाया। कहते है न दूध का जला छाछ भी फूंक-फूंक कर पीता है। इसलिए पाकिस्तान पर एयर स्ट्राइक होने के बाद न केवल कांग्रेस ने वायुसेना के शौर्य और पराक्रम को सराहा बल्कि आतंक के मुद्दे पर सरकार के साथ खड़े होने का संदेश भी जनता में देने की कोशिश की। कांग्रेस इस स्थिति में बीजेपी को माइलेज ले जाने नहीं दे सकती। भाजपा अगर इस मुद्दे को भूना ले जाती है तो उसे पकड़ना अन्य पार्टियों के लिए मुश्किल हो जाएगा। इसलिए कांग्रेस ने तब तक इंतजार किया जब तक देश के अंदर से स्ट्राइक के सबूत के लिए आवाजें नहीं उठी और कई इंटरनेशनल एजेंसियो के रिपोर्ट नहीं आई। कांग्रेस ने खुल कर सीधे तौर पर कभी सबूत नहीं मांगे बल्कि सैनिक परिवारों द्वारा मांगे गए सबूत वाले सवालों को कांग्रेस ने बीजेपी से पूछने शुरू किए। कांग्रेस के लिए यह बहुत बड़ी चुनौती है कि आगामी चुनावों में बीजेपी एयर स्ट्राइक के मुद्दे का राजनीतिक माइलेज ना ले जाए। इसलिए कांग्रेस की यह कोशिश बनी हुई वह किस तरह इस मुद्दे से जनता का ध्यान हटाए और बीजेपी को फिर से पुराने राफेल, बेरोजगारी जैसे मुद्दों पर घेरना शुरू करें।

एयर स्ट्राइक से किसको फायदा

एयर स्ट्राइक से नफा नुकसान पर बीजेपी और कांग्रेस के बयानवीरों के भी बयान आने लगे हैं। कर्नाटक के बीजेपा नेता बी.एस. येदियुरप्पा का कहना है कि एयर स्ट्राइक से बीजेपी को कर्नाटक में लगभग 20 से 25 सीटों को फायदा होगा। कांग्रेस और अन्य विपक्षी पार्टियां भी इसी बात से चिंतित है कहीं ये मुद्दा उन्हे समय से पहले ही खेल से बाहर न कर दे। पुराना इतिहास भी रहा है जब भी युद्ध और युद्ध जैसे हालात बने है तो सत्तारूढ़ पार्टियों को उसका फायदा भी मिला है। 1971 के युद्ध के तुरंत बाद हुए सभी विधानसभा चुनावों में कांग्रेस पार्टी को देश में बड़ी जीत मिली थी। हालांकि लोग तर्क देते हैं कि कारगिल के बाद क्यों अटल बिहारी वाजपेयी को इसका फायदा नहीं मिला। कारगिल और 2004 के चुनावों में लगभग 4 से 5 साल का फर्क था। और उसके अंतराल में कंधार विमान अपहरण कांड और मंहगाई जैसे मुद्दों ने उस समय की तत्कालीन सत्तारूढ़ पार्टी को सत्ता से बेदखल करने का काम किया। प्रधानमंत्री मोदी और राहुल गांधी दोनों के लिए ये चुनाव बेहद अहम है। दोनों का आने वाला राजनीतिक भविष्य भी इसी चुनाव से तय होना है। दोनों एक दूसरे पर लगातार हावी होने की कोशिश में हैं। चुनावी बिगुल भी बज चुका है। आचार संहिता भी लग चुकी है। अभी की स्थिति देखते हुए प्रधानमंत्री मोदी राहुल गांधी पर 20 साबित होते दिख रहे हैं। पीएम मोदी एयर स्ट्राइक के मुद्दे को भूना कर अपनी नैय्या पार लगाने की कोशिश में रहेंगे वहीं राहुल गांधी एयर स्ट्राइक के मुद्दे को धीरे-धीरे किनारे कर फिर से बेरोजगारी, राफेल, सांप्रदायिकता जैसे मुद्दे को सामने लाकर बीजेपी को एयर स्ट्राइक के मुद्दे पर राजनैतिक माइलेज लेने से रोकने की कोशिश करेंगे और चुनावी सफलता हासिल करने की कोशिश करेंगे। वर्तमान स्थिति को देखकर ये कहना गलता नहीं होगा कि राष्ट्रवाद के नाम पर देश में नया उन्माद पैदा किया जा रहा है। जब चुनाव का वक्त है तो राष्ट्रीय सुरक्षा पर फैसले को भुनाने की जगह अपने कार्यकाल के कामकाज पर वोट मांगना ज्यादा जरूरी है। देश के किसी नागरिक की राष्ट्रभक्ति पर किसी भी पार्टी या विचारधारा को संदेह करने का हक नहीं है। खैर, ये तो तय है कि साल 2014 की तरह साल 2019 भी काफी दिलचस्प होने वाला है।

BALKARAN SINGH, (VICKY), JIMMY
MANGAT BROTHERS
EDITING POINT
LUCKY STAR COMPLEX,
1ST FLOOR, SHOP NO.9,
OPP. MAIN BUS STAND,
HANUMANGARH JN.
- CONTECT FOR -
HIGH QUALITY VIDEO EDITING,
HD VIDEO, VHS TO DVD,
DVD TO PEN DRIVE
80944-40903, 80947-00550, 77918-68380

द्वारिका प्रिन्टर्स

भीलवाड़ा की एक मात्र नं. 1
मल्टीकलर ऑफसेट प्रिन्टिंग यूनिट

मल्टीकलर पोस्टर एवं
पैम्पलेट वाजिब दाम पर
बेस्ट क्वालिटी में एक बार
पधार कर सेवा का मौका
जरूर देवें

फ्लेक्स

स्टार, विनायल,
सन् बोर्ड, बैकलाईट,
ग्लोसाईन बोर्ड,
वन वे विजन

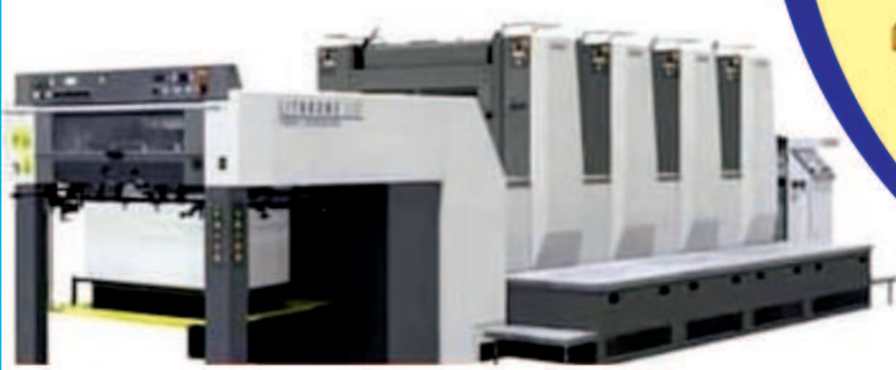

ए-5, संजय कॉलोनी, श्री गेस्ट हाऊस वाली गली, भीलवाड़ा

9414115720, 9571738820

email:dwarikaprinters@gmail.com